इतिहासी नगर है क्योंकि मीरकासम की जो बंगाल बिहार और उडीसा का हाकम था अवध को भागने से पहिले इस जगह लड़ाई हुई थी। उसने अंग्रेजों की फौज को रोकने के लिये टुकरा नाले का पुल जो मुंगेर से ३ मीलथा उड़ा दिया था, पुल के बड़े बड़े टुकड़े अभी तक मौजूद हैं॥

मुंगेर का किला चट्टान के सिरे पर ऐसी जगह बना हुआ है जहां से गंगा जी दिखाई देती हैं किले के अहाते के अन्दर जो चार हजार फीट लम्बा और ३५०० फीट चौड़ा है एक ऊंचा मेड़ है जहां पहिले कोट था कोट अब बाकी नहीं रहा॥

मुंघेर के जिले में कजरा स्टेशन के पास एक पहाड़ी है जिस पर कहते हैं बुद्ध आकर रहा था। पहले यह युग में बड़ी मशहूर यात्रा की जगह थी स्टेशन से पांच मील के फासले पर एक और पहाड़ी है जो शृङ्गीऋषि के नामपर ऋषियाशृङ्गा कहलाती है॥

मुंघेर कलकत्ते से ईस्ट इण्डियन रेलवे में २६६ मील हैं तीसरे दरजे का किराया ३।-)॥ लगता है॥

मुरादाबाद।

सूबा आगरा और अवध में जिला मुरादाबाद का सदर मुकाम और बड़ा नगर है। और रामगङ्गा दरया के दाहने किनारे पर रामपुर रियासत की हद से १० मील के फासले पर वाके है। मुरादाबाद को रुस्तमखां कटूर के हाकिम ने सन् १६२५ ई० में बसाया था और उसने शाहजहान के पुत्र मुराद के नाम पर इस नगर का नाम मुरादाबाद रक्खा इस नगर के ११० मुहल्ले हैं और कई अच्छे बाजार हैं यहां के पुराने मकान देखने के लायक यह हैं रामगंगा के किनारे पर किला और जमा मसजिद जिन को रुस्तमखां

ने बनाया था मुरादाबाद के हाकम नवाब अज़मत उल्ला का मक़बरा, कमेटी घर, गवर्नमेंट और मिशन स्कूल, कोतवाली और शफ़ाख़ाना जो अभी बने हैं, डाक खाना, जेल के पास छावनी है पर पलटनें अब उठा ली गई हैं॥

अनाज, चीनी, घी, तेल, और तेल कावीज कपड़ा और धातें बाहर से आती हैं। मुरादाबाद के पारे की कुलई किये हुये बर्तन बहुत मशहूर हैं हजारों जीव इस काम के सबब पलते हैं॥

शहर में एक बड़ी और सुन्दर सराये है और दूसरी स्टेशन के पास है, स्टेशन पर और शहर में यके और गाड़ियां सवारी के लिये हर वक़्त मिलती हैं॥

मुरादाबाद अवध रुहेलखण्ड रेलवे पर सहारनपुर से १२० मील और दिल्ली से १०० मील है तीसरे दरजे का किराया १।≈)। और १।-) लगता है॥

मुराप्पूर।

मद्रास रेलवे पर स्टेशन है और यहां से १७ मील पूर्व की ओर पवित्र पहाड़ा थीरथमलई है जिसकी चोटी पर रामनाथेश्वरम का मन्दिर है यहां बहुत यात्री आते हैं पहाड़ी की चोटी से पानी गिरता है जिस को हिन्दू लोग निरमल और पवित्र जानते हैं पहाड़ी के नीचे तीरथमलई नगर है यहां हरसाल रथ यात्रा का मेला होता है

मुराप्पूर स्टेशन पर देशी गाड़ियां और यके तीरथमलई जाने के लिये मिलते हैं। गाड़ी का किराया १॥) से १॥।) तक और यके का २) से २।) तक होता है॥

मुराप्पूर स्टेशन के पास एक लोकल फण्ड चोलत्री या आश्रम है यहां हर जात के लोग ठैहर सके हैं॥

अनाज, अरिंड का बीज, बांस और चमड़ा साफ करने की छाल बाहर जाती है और नमक, तमाकू सुपारी अंग्रेजी कपड़ा बाहर से आता है ॥

सुराप्पूर मद्रास से १६६ मील है और तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में २७ और सवारी गाड़ी में १॥) लगता है ॥

मीरगंज ।

जी० आई पी० रैलवे पर स्टेशन है बाकी हाल के लिये मेरा घाट देखो ॥

मुरस्सापुर ।

यह नगर अवध के प्रतापगढ़ जिले में मानिकपुर से जो रायबरली की सड़क पर आबाद है ४ मील है ॥ दशहरे पर यहां बड़ा भारी मेला होता है जिस में ३०००० के करीब लोग आते हैं। यहां अबरे बहुत बनते हैं ॥

रायबरेली सहारनपुर से ३७० मील और मुगलसराये से १४१ मील है तीसरे दरजे का किराया ३।≈)॥ और १॥) लगता है ॥

रायबरेली में मुरसापुर जाने के लिये सवारी मिलती है ॥

मुलाकला चेरुवू ।

मद्रास अहाते में साउथ इण्डियन रेलवे पर स्टेशन है। इस का फासला मद्रास बीच जंकशन से ३१६ मील है और तीसरे दरजे का किराया ३॥) लगता है। इस जगह एक पुराना मन्दिर है जिसका नाम चेनरागवी येवालम है जिसका थवाजस्थम्बलम स्टेशन के दक्षिण

पूर्व की तरफ ८० फीट के करीब है। स्टेशन से दो मील के करीब एक और मन्दिर है जिसका नाम काऊसी कोंदारायाद थेवालम है जहां हिन्दूलोग जाकर दर्शन किया करते हैं। स्टेशन से तीन मील के फासले पर हर शुक्र के दिन मेला होता है ॥

स्टेशन के पास एक चोलत्री या आश्रम है ॥

मूली ।

मोरवी रेलवे पर स्टेशन और मूली रियासत की राजधानी है यहां कृष्ण जी का मन्दिर है जिसकें हरसाल दो बड़े भारी मेले होते हैं पहला माघसुदी पंचमी और दूसरा श्रावण वदि अष्टमी का ॥

स्टेशन से नगर ३ मील के करीब है पक्की सड़क जाती है और स्टेशन पर बैल गाड़ियां मिलती हैं एक सवारी का किराया ◌) से ◌) आने तक लगता है ॥

स्टेशन के पास एक धर्मशाला और बंगला है एक धर्मशाला मन्दिर के अहाते में भी है। बंगले का किराया १) एक दिनका और धर्मशाला का किराया एक पैसा एक आदमी का लगता है ॥

मूली में रुई निकालने का कारखाना है। यहां से रुई बाहर जाती है

मूली बम्बई से ४०३ मील है बधवान और वीरमगाम के रस्ते तीसरे दरजे का किराया ४।◌)॥। लगता है ॥

मूञ्ज ।

इटावा नगर से १४ मील सूबा आगरा और अवध में गांव और पुराने खण्डर हैं। वहां एक पुश्ता है। जिस की बाबत हिऊम साहब लिखते हैं कि यहां वह मूंज था जिस को महमूद गज़नवी ने १०१७ में सख़्त लड़ाई के बाद फतह किया पर मूंजके लोग कहते हैं यहां पाण्डव और कौरव की लड़ाई हुई थी मूंजका राजा चरोनी चंद

था ज़िसका महाभारत में ज़िकर है और उस के दो लड़के राजा धिधुर की तरफ़ से लड़े थे बड़े फाटक और गढ़गज की जगह अबतक दिखाई जाती है पुश्तें में से पुरानी ईंटें निकलती हैं जिन से गाओं वाले अपने घर बनाते हैं। यहां एक अनूठा चौकोर कुआं है ॥

इटावा ईस्ट इण्डियन रेलवे में कलकत्ते से ७२० मील है तीसरे दरजे का किराया ६॥=)॥। है ॥

मुंतजापुर ।

जी० आई० पी० रेलवे पर स्टेशन है, स्टेशन पर वेटिंग रूम बने हुए हैं और यहां एक सराय है करंजा नगर जो यहां से २१ मील के करीब है और जिस के गिर्द दीवार बनी हुई है ब्योपार की जगह है इस नगर में कई पुराने मन्दिर और लकड़ी के काम के कई अच्छे नमूने मौजूद हैं कंजऋषि के नाम पर इस नगर का नाम कंजा होगया है यह ऋषि अपने पूर्व जन्म के पापों से दुःख पा रहे थे उन्हों ने यहां आकर तपस्या की तो मोक्ष हुई इसी सबब से हिन्दू लोग कंजा को बड़े तीर्थ की जगह मानते हैं। यहां हर साल अपरैल के महीने में ४ यात्रा के मेले होते हैं और एक मेला नवम्बर में होता है हिङ्गुलासपुर का मेला २० दिन रहता है ॥

कंजा में रुई दबाने और रुई निकालने की कलें और एक बड़ा तालाब है इस तालाब के किनारों पर कई मन्दिर बने हैं। मुर्तजापुर के स्टेशन के पास भी रुई दबाने और रुई निकालने की कलें हैं अनाज और रुई का व्यापार होता है ॥

मुर्तजापुर जी० आई० पी० की बम्बई नागपुर लाइन पर बम्बई से ३८६ मील है तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में ६=) और सवारी गाड़ी में ४) लगता है ॥

मथुरा ।

सूबा आगरा और अवध में जमुना दरया के दहने किनारे पर बहुत पुराना नगर और हिन्दुओं का बड़ा तीर्थ है और खास कर ब्रजमण्डल को जहां कृष्ण जी रहते थे हिन्दू लोग बहुत पवित्र मानते हैं। और बड़ा आदर करते हैं॥

मथुरा से ६ मील नीचे की ओर महावन नगर है जहां कृष्ण जी पले थे जब वह बालक थे तो उन के मामा कंस ने उन के मारने का हुक्म दिया पर उनकी टैहलनी उन को महावन में नन्द की स्त्री जशोदा की लड़की से बदल गई। नन्द के महल में मट-किये अब भी हैं जिन में नन्द की स्त्री मक्खन निकाला करती थी और दीवार में एक जगह बनी हुई है जहां गोपियां हंसी से कृष्ण जी की बांसुरी छुपा देती थीं इस महल को हिन्दू औरतें बच्चा होने के पीछे ६ दिन तक पूजती हैं इसी सबब से इस को छत्ता पालना कहते हैं मथुरा से ५ मील उत्तर की ओर दरया के टापू में वृन्दावन पवित्र नगर है इस में अनगिणत मन्दिर हैं पर सब से मशहूर गोविन्ददेवा, गोपीनाथ और सेठों का बनाया हुआ मन्दिर है वृन्दावन बड़ी पवित्र जगह है और पुरी, थानेश्वर हरद्वार के बराबर समझा जाता है। दरया के बायें किनारे महावन से एक मील के करीब गोकुल गांव है कहते हैं कि विष्णु कृष्ण जी के अवतार में पृथ्वी पर इसी जगह आये थे। इन सब तीर्थों में हजारों यात्री सारा साल आते हैं॥

मथुरा पर महमूद गज़नवी ने १०१७ में चढ़ाई की और सिकन्दर लोदी ने १५०० में जिस से बहुत नुकसान हुआ।

अंग्रेजी सन् ४०० में मथुरा में बुद्ध लोग बहुत थे उनके स्थानों के निशान अब तक हैं॥

मथुरा जी० आई० पी० रेलवे में बम्बई से ८६८ मील और दिल्ली से ८६ मील है तीसरे दरजे का किराया डाकगाड़ी में १०॥=) और १।=) है और सवारी गाड़ी में ६-) और १) है ॥

मथुरा में अनगिनत धर्मशालायें हैं इन में से चार हारडिंग दरवाजे में एक भरतपुर दरवाजे में और ४ डीग दरवाजेमें हैं छावनी में डाक बंगला भी है। स्टेशन पर और शहर में यक्के और गाड़ियां सवारी के लिये मिलती हैं ॥

मैसूर ।

अहाता मदरास में रियासत मैसूर की राजधानी है महाराजा साहब इसी जगह रहते हैं। मैसूर में किले का महल, जगन मोहन महल, गर्मी में रहने का महल, और दूसरे सरकारी मकान देखने के लायक हैं अक्तूबर के महीने में दशहरे का बड़ा भारी मेला होता है।

मैसूर के दक्खिन पूर्व की ओर चमन्दी पहाड़ी की चोटी पर चमन्दी देवी का बड़ा मन्दिर है और जो सीढ़ियां मन्दिर को जाती हैं उनपर शिवजी के बैल, नन्दीकी पत्थरकी मूर्ति है। यह मूर्ति दोदादेवा राजाकी जो मैसूर की गद्दी पर १६५६ में बैठा आज्ञा से बनाईगई थी ॥

स्टेशन पर खाने और आराम कमरे बने हैं ॥

मैसूर पूना से सदर्न मरहट्टा रेलवे में ७११ मील है तीसरे दर्जे का किराया डाक गाड़ी में ६)॥ और सवारी गाड़ी में ६॥=) लगता है ॥

मारमुगाओं ।

मदरास अहाते में है वैस्ट इण्डिया पुर्चगीज रेलवे यहां पर खतम होती है। मारमुगाओं लोंदा जंकशन से ७० मील और कैसल राक से ५४ मील है। कैसलराक और कोलम के बीच में घाट का नजारा बड़ा अच्छा है और दूध सागर पानी की चादर जो कैसल



Photo by Bourne and Shepherd Calcutta.

तंजौर का बाज़ार।

रस्ते १२२१ मील और मुसाफिर गाड़ीमें तीसरे दरजेका किराया११॥=) और जी०आई० पी० ईस्ट इण्डियन रेलवे के रास्ते १३४६ मील और तीसरे दरजेका किराया १३=) है। यहां हिन्दुस्तानकी कई रेलें मिलतीहैं॥

शिवजी की स्त्री और मशहूर देवी काली माई के मन्दिर काली घाट के सबब इस शहर का नाम कलकत्ता होगयाहै। मन्दिर शहरके दक्षिण में वाक़े है। बहुत पुराने जमाने में इर्द गिर्द का देश कालीक्षेत्र या काली का मैदान कहलाता था यह मन्दिर ३०० साल का है॥

काली को लोग देवी या महादेवी कहते हैं। पर उस के दुर्गा चण्डिका और भैरवी भी नाम हैं। काली की मूर्ती के चार हाथ हैं एक में तलवार है और एक हाथ में राक्षस का शिर है जिसको उस ने मारा है और दो हाथों से अपने सेवकों को हौंसला देती है कानों में बालियों की जगह दो लोथें और गले में खोपड़ियों की माला पहने हुए हैं कपड़े की जगह मरे हुए आदमियों के हाथों का कमर-बन्ध है और जीभ बाहिर निकली हुई है। एक लात अपने पति को रान पर और दूसरी उसकी छाती पर रक्खे खड़ी है। राक्षस को मारने के बाद खुशी में आकर ऐसे जोर शोर से नाची कि धरती कांपने लगी, देवताओं के कहने से शिवजीने उसे रोका पर जोश के सबब से काली ने उस की परवाह न की और वह मुरदों में लेट गया। काली नाचती रही आखिर उस की नजर अपने पति पर पड़ी और उसने शरमिन्दगी से जीभ बाहिर निकाल दी॥

कालिका पुराण से मालूम होता है कि मृग, गैण्डा और आदमी की भेट देवी को बहुत पसन्द है और भेट देनेवाले के शरीरसे खून लेना देवी के लिये बहुतही अच्छा बल है॥

इस मन्दिर के असूले की बाबत कहा जाता है कि पार्वती के बापदक्षा ने एक यज्ञ किया और शिवजी को उस में न बुलाया

पार्बती को यह हलकापन बुरा मालूम हुआ और उसने योग की अग्नि से अपना शरीर भस्म किया शिव जी को बड़ा रंज हुआ और पार्बती की लोथ को कन्धे पर डालकर सारी धरती पर फिरने लगे जिस से बड़ी हलचल मचगई। लोगों ने तंग आकर विष्णु से अर्जकी उस ने अपना चक्कर हवा में फेंका और पार्वती की लोथ के ५० टुकड़े होगये जहां जहां वह टुकड़े गिरे एक मन्दिर बन गया। कहते हैं कि कालीघाट में देवी की बायें पावों की दूसरी अंगुली है॥

यात्री काली घाट साल भर आते रहते हैं पर शिवजी या दुर्गा के तेहवारों के दिन अनगिनत लोग जमां होते हैं। जिन लोगों के बच्चे न होते हों या जो लोग किसी कष्ट में हों काली के पास बचन करते हैं कि अगर उन के लड़का हो या कष्ट दूर होजाये तो उसको बकरा चढ़ायेंगे॥

शहर कलकत्ता हुगली के पूर्वी किनारे पर कई मील तक फैला हुआ है और समुद्र से ८० मील है। हौड़ा जिसे में कलें और कारखाने हैं, शिवपुर जहां इंजनीयरोंका गवर्नमेण्ट कालिज और नबाताती बाग है शहर के सामने दरिया के दूसरे किनारे पर है॥

पहिले पहिल कलकत्ते का जिकर सन् १५६६ ई० में अकबर के जमाने में पाया जाता है और उस के सौ साल के बाद ईस्टइण्डिया कम्पनी ने यहां कोठियां बनाकर इस को अपना सदरमुकाम बनाया।

पुराना किला फोर्ट बिलियम १७०० ई० में मदरास अहातेके मातहत बना था, जो फोर्टविलयम अब मौजूद है इस को कलाइव ने सन् १७५७ ई० में शुरू करके सन् १७७३ ई० में ३००००००० रुपये की लागत से खतम किया॥

सन् १७५६ ई० में बंगाल का नवाब सिराजउद्दौला अंगरेजों की बस्ती पर जा पड़ा और १४६ आदमियों को पकड़ कर एक छोटे से कमरे में बन्द कर दिया इन में से २३ आदमी सबेरे जीते

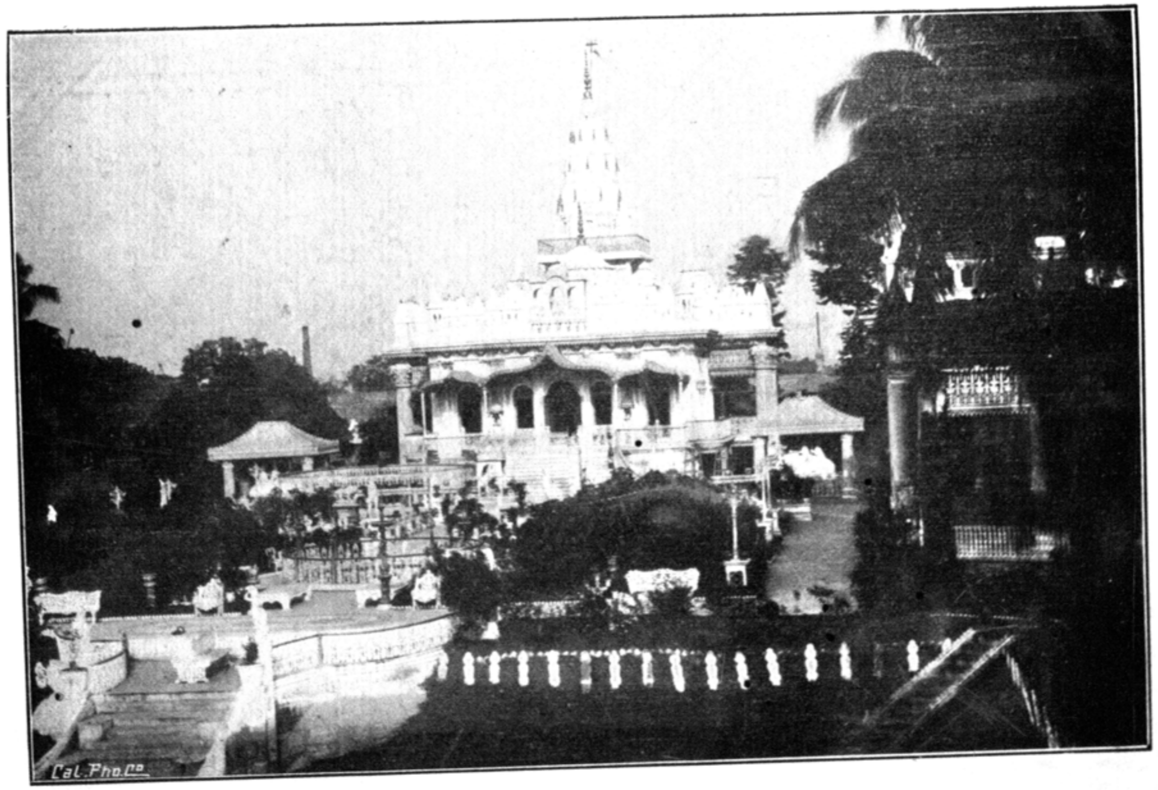


Photo. by Bourne and Shepherd, Calcutta.

जैनियों का मन्दिर कलकत्त:।

निकले। तारीख में वह कमरा बलैक होल के नाम से मशहूर है। सन् १७५७ ई० में क्लाइव ने नवाब को भगाकर कलकत्ते पर कबजा कर लिया और अंग्रेजी राज की नींव रक्खी॥

देखने के काबिल और जगह यह हैं। शाही टकसाल स्टरैंड में, नबाताती बाग शिवपुर में, चिडियाघर अलीपुर में, अदनबाग और अख़तर लोनी का मीनार मैदान में अजायब घर और एशियाटिक इन्सटीटयूशन चौरंगी में, तारघर, डाकखाना, मेटकाफहाल, सैंटपाल का गिर्जा, हाईकोर्ट, गवर्नमेंट हाऊस, जैनियों का मन्दिर, टाऊन हाल खिद्र बाजार की तरफ तीन मील पर एक और मन्दिर है जिस को मुई कैलाश कहते हैं। इस में शिवजी का लिंग है। शिवरात्री के तेहवार को यहां एक मेला होता है जिस में हजारों यात्री आते हैं॥

कलकत्ते में बेशुमार अंग्रेज़ और देसी बड़े बड़े सौदागरों की कोठियां हैं॥

कलकत्ते में देसी मुसाफिरों के वास्ते जो सराय और धर्मशाला हैं नीचे लिखी जाती हैं॥

(१) हौड़ा स्टेशन के पास राजा शिवबख़श बगला की धर्म्म शाला जहां खाने को मिल सक्ता है॥

(२) बड़ा बाज़ार नम्बर ६ शामा बाई लेन में बाबू मोतीचन्द नख़त की बिना किराये धर्मशाला हिन्दू और जैनियों के वास्ते॥

(३) मल्लिक स्टरीट में नम्बर ३,४,५ राजा सुर्जनमल की बिना किराये धर्मशाला है॥

(४) नम्बर ५०५१ ताराचन्ददत्त स्टरीट में मसजिद के पास हाजी शेख बख़्श इलाही का मुसलमानों के वास्ते बिना किराये मुसाफिर खाना॥

कल्यान ।

जी० आई० पी० रेलवे की नार्थ इस्ट और साऊथ इस्ट लैनों का जंकशन है बम्बई से ३४ मीलहै और तीसरे दर्जे का किराया ।≈) है ॥

स्टेशन पर वेटिंग रूम और रीफ़रेशमेंट रूम बने हुए हैं और स्टेशन के पासही देसी मुसाफिरों के लिये एक धर्मशाला है कल्यान तलके का मामलतदार यहां रहता है सबजज्ज की कचहरी भी हैं यहां एक खूबसूरत खाडी है किशती की सैर और मच्छी के शिकार के लिये बहुत अच्छी है । और मुसलमानों का एक मेला जिसको बन्द का मेला कहते हैं हर साल मई के महीने में स्टेशन से एक मील के फासले पर होता है यहां पर ईंटों और खपरेलों के भट्ठे और पास पत्थर की खानें हैं । कल्यान से अम्बर नाथ जो हिन्दूओं की बड़ी तीर्थ की जगह है ४ मील है ॥

रुकमनीबाई का हस्पताल जिस में सर्कार की तरफ से डाक्टर रहते हैं स्टेशन के पास है ॥

कलयान बड़ा पुराना बन्दर गाह है । स्टेशन पर तांगे और बैल गाड़ियां सवारी के लिये मिलती हैं ॥

कसूर ।

पंजाब के जिला लाहौर, तहसील कसूर में नगर और म्यूनिसिपैलिटी है और नार्थवैस्टर्न रेलवे (पंजाब लैन) की लाहौर फीरोज़पुर शाख पर लाहौर से ४२ मील है। लाहौर से तीसरे दरजे का किराया ॥) है । कहते हैं कि इस नगर को रामचन्द्र जी के पुत्र कुश ने बसाया था अब यह नगर लाहौर के सिवा जिले में सब से बड़ा है बड़े बाज़ारों में ईंटों का फर्श लगा है और उस के बीच में और इधर उधर नालियां गन्द। पानी बाहर जाने के वास्ते बनी है

पुलिस भी इन्तज़ाम के वास्ते काफ़ी है। कसूर चमडे के काम के लिये बहुत मशहूर है, काठियां, देसी जूतियां और लुंगियां अच्छी बनती हैं। मेथी खरबूजे और मिट्टी के बर्तन अच्छे होते हैं और अनाज का ब्योपार होता है॥

कसूर के इर्द गिर्द यह मेले होते हैं।

(१) इमामशाह का मेला जो कसूर से ३ मील पर फ़र्वरी के महीने की १४ तारीख के क़रीब होता है इस मेले में २ हज़ार के क़रीब लोग आते हैं॥

(२) बुल्लेशाह का मेला कसूर से ७ मील पर अगस्त के अख़ीर में होता है, ३ हज़ार के क़रीब लोग आते हैं॥

(३) बसंत का मेला फ़र्वरी की १२ या १३ के क़रीब सदर दिवान की खानगाह पर होता है जिस में ५ हज़ार के क़रीब लोग आते हैं।

(४) चत्तियांवाली में होली मार्च के आख़ीर में होती है जिस में ७ हज़ार के क़रीब लोग होते हैं॥

(५) माड़ी में चैत्र चौदस का मेला मार्च के आख़ीर में होता है ३ हज़ार लोग आते हैं॥

(६) घड़ियाले में शेरशाह का मेला अपरैल में होता है ५ हज़ार आदमी आते हैं॥

(७) खेम कर्न में शाह शम्मस का अगस्त में मेला होता है ७ हज़ार के क़रीब लोग आते हैं॥

(८) शाह शम्मन का मेला राओखां वाले से ४ मील पर अपरैल के महीने में होता है यह मेला सब मेलों से बड़ा है और इसमें ६ हज़ार के क़रीब लोग आते हैं॥

यह सब मेले एक दिन रहते हैं और इन में हिन्दू और मुसलमान दोनों जाते हैं॥

शाह थम्मन और कसूर के सिवा किसी मेले की जगह सराये या धर्मशाला नहीं, कसूर में सवारी के लिये थक्के मिलते हैं ॥

खटमंडू ।

रियासत नीपाल की राजधानी है और एक घाटी में समुद्र से ४५०० फ़ीट की ऊंचाई पर वाक़े है। शहर के बीच में राजा के महल के पास एक पुरानी इमारत है जिस के सबब इस शहर का नाम खटमंडू हो गया है। महल के सामने अहाते में बहुत से छोटे छोटे मन्दिर हैं जिन में से बाज़े कई मंज़िल ऊंचे हैं और उन में सुनहरी और बेल बूटे का बहुत काम किया हुआ है ॥

मछिन्द्रनाथ नीपाल का सरपरस्त देवता ख़ियाल किया जाता है। कहते हैं कि एक दफ़ा नीपाल में १२ साल तक वर्षा न हुई जिस से मुलक के तबाह होजाने का डर हुआ सो नरिन्द्रदास ३४७ ई० के क़रीब आसाम में एक बुध महा पुरुष को बुलाने गया। उसका आदर करने के लिये ब्रह्मा ने सड़क पर झाड़ू दिया और वेदों से श्लोक पढ़े, संख बजाया विष्णुमहादेव जी ने सड़क पर पानी छिड़का, इंद्र ने छाता पकड़ा, यमाने धूप जलाई, कुबेरने धन लुटाया अग्निने चांदना किया वायू ने झंडा पकड़ा और ईशान ने प्रेतों को डराया इस महात्मा के आने पर बहुत पानी पड़ा और मुलक काल से बच गया ॥

इस महात्मा के आने की यादगार में राजा नरिन्द्र दास ने एक मन्दिर बनाकर उसका नाम मछिन्द्रनाथ रक्खा और एक सालाना मेला भी क़ायम किया जो अब तक मुलक के सब तेहवारों से बड़ा माना जाता है। मेले के आख़री दिन मछिन्द्रनाथ की कमली झाड़ कर लोगों को दिखाई जाती है कि वह तुम्हारे पास से कुछ नहीं लिये जाता, ग़रीबी में है पर राज़ी है ॥

खाण्डवा ।

जी० आई० पी० रेलवे का जंकशन और मीमर जिलेका सिवल स्टेशन है। बम्बई से जी० आई० पी० रेल में ३५३ और दिल्ली से ६०४ मील है तीसरे दर्जे का किराया सवारी गाड़ी में दोनों जगह से ३॥≈) और ६।) है। आर० एम० आर रेल का यहां जंकशन है। स्टेसन पर वेटिंग रूम याने मुसाफिरखाने बने हुए हैं और पास एक सराए है जो स्टेशन से दिखाई देती है दूर के मुसाफिरों के लिये आराम करने की यह बहुत अच्छी जगह है तूलजा भवानी का मेला यहां से ४ मील के फासलेपर हर साल जनवरी और फरवरीके महीनों में होता है जिस में १० हजार के करीब लोग जमा होते हैं ऊँकार मंधाटा मन्दिर को जाने वालों को आर० एम आर० रेलवे के सनावद स्टेशन पर उतरना चाहिये यह स्टेशन खांडवा से ३४ मील और तीसरे दर्जे का किराया।−)॥ और अजमेर से ३५६ मील और तीसरे दर्जे का किराया ३।−) हैं। ऊँकार मंधाटा मन्दिर यहां से ४० मील है यात्रियों की सवारी के लिये बैलगाड़ियां मिल सकती हैं। यह पवित्र स्थान नर्वदा दरिया के बीच मे वाके है शिवजी के बेशुमार मन्दिर निहायत पवित्र और पुराने समझे जाते हैं बाजे इन में से बनावट और तारीख के लिहाज से बहुत मशहूर हैं॥

स्वर्गवासी रिचर्ड टेम्पल साहब लिखते हैं कि नर्वदा भयानक जंगलों से निकलकर यहां फिर खूबसूरत बन जाता है। बड़े ज़ोर शोर से चटानों पर गिरकर फिर चुपचाप ऊंची ऊंची पहाडियों के नीचे से होताहुआ ऊँकार मंधाटा के पवित्र टापू के गिर्द जिसपर मन्दिर और पुजारियों के घर बने हुए हैं बहता है यहां फिर दर्या में गहरे गहरे गढे हैं जिन में से सारे मकान और पहाड़ियां नज़र आती हैं और यहां पर अकसर मेले होते रहते हैं जो जगह की खूबसूरती को और बढाते

हैं। पहले जमाने में यात्री अपने आप को चिट्टानों की चोटियों से गिराया करते थे कि नर्मदा में मरकर मुक्ति पावें ॥

खंडवा बड़े व्योपार की जगह है यहां कई रुई निकालने और दबाने के कारखाने हैं। स्टेशन से ४ मील. मोबट मकान पर वाटर वर्कस यानी पानी का कारखाना है जहां से शहर में पानी आता है॥

ग्वालियर।

रियासत गवालियर की राजधानी और महाराजा सिन्धिया के रहने की जगह है जी० आई० पी० रेलवे में बम्बई से ७६३ और दिल्ली से १६५ मील है तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में १०।=) और २॥-) है और सवारी गाड़ी में =॥=) और २।-) हैं॥

गवालियर की तीन बातें बड़ी अजीब हैं पहिले यहं जैनियों की सब से पुरानी यात्रा की जगह है दूसरे हिन्दुओं के अच्छे से अच्छे समय के सुन्दर महलों के नमूने मौजूद हैं तीसरे हिन्दुस्तान देश के सब से बुद्धिमान राजा की राजधानी किले में है॥

यहां दो अनूठे मन्दिर हैं एक सास बहू का मन्दिर जो पदमनाथ छठे तीर्थंकर के नाम है से। कहते हैं कि यह अंग्रेजी सम्बत् १०६३ के करीब बनाया गया था अब इसकी डेउढ़ी बाकी है जो १०२ फीट लम्बी और ६३ फीट चौड़ी है और पूजा की जगह और उसके सिकरे की सिरफ नीव है डेउढ़ी तीन मंजिल ऊंची है पर उसकी छत टूट गई है दीवारों पर फूलों, पशुओं और मनुष्यों की मूर्ति बनी हैं बीच का कमरा ३० फीट लम्बा चौड़ा है और उस के अन्दिर चार बड़े २ पीलपावें हैं जिन पर छत्त टिकी हुई है छत्त पर बड़ा सुन्दर बेल बूटे का काम किया हुआ है॥

दूसरा मन्दिर जो गवालियर के किले में है तेली का मन्दिर कहलाता है। कहते हैं कि उसको एक धनवान तेली ने बनाया था यह मन्दिर ६० फीट लम्बा चौड़ा है और पूर्व की तरफ ड्योढ़ी है पहले यह मन्दिर विष्णु का मन्दिर था पर पीछे इस को शिव जी की पूजा के लिये बना लिया, यह मन्दिर दस या ग्यारह सदी ई० में बना था॥

गवालियर में जैनियों ने चट्टान के इर्द गिर्द काट कर अनूठी मूर्त्तियां बनाई हुई हैं जिन में ५७ फीट ऊंची से मामूली आदमी के कद की मूर्त्तियां हैं पर उन में से बहुत सी आदिनाथ पहले तीर्थकर की हैं पास चाकी पर बैल बैठे हुए हैं। नेमीनाथ की मूर्त्ति ३० फीट ऊंची है और उस के पास संख है। बड़ी अचम्भे की बात यह है कि यह सब ३३ वर्ष में खोदी गई थीं॥

मानसिंह का बनायाहुआ महल हिन्दुओं के काम का अच्छा और मनभावना नमूना है, बाहर से यह महल ३०० फीट लम्बा और १६० फीट चौड़ा है और पूर्व की तर्फ से १०० फीट ऊंचाहै, इसकी दो मनज़िल धरती के नीचे हैं इस के हर एक रुख पर ऊंचे २ सुन्दर बुरज बने हैं और उन पर सोने की झाल फिरी हुई है तांबे के गुम्बज हैं यह और बिक्रमाजीत, जहांगीर और शाहजहान के बनाए हुए महल मिल कर एक झुण्ड बनगया है जो सुन्दरताई में सैंटरल इण्डिया में सब से बढ़कर है॥

अंग्रेजी ऊनी रेशमी और सूती कपड़े, लोहे के चाकू, कशमीरी दोशाले, लंका के हीरे मोती बाहर से आते हैं और सोना, चांदी, पारा तांबा, कलई, जस्त और अफीम बाहर जाती हैं॥

गया या बुद्ध गया ।

गया जिले का सदरमुकाम है। यहां पटना गया रेलवे खतम होती है, यह जगह कलकत्ते से २६२ मीलहै तीसरे दरजे का किराया ३।)॥। लगता है। यह शहर बड़ा पुराना और मशहूर है और पहले बुद्ध लोगों का नगर था। उनका बड़ा मन्दिर बुद्ध गया में स्टेशन से ७ मील के फासले पर अबतक मौजूद है और उस में बुद्ध की बड़ी खूबसूरत मूर्त्ति और बहुत से बुद्ध पुजारी हैं। गया के मन्दिर अब ब्राह्मणों के हाथ में हैं और हिन्दू लोग इस जगह श्राद्ध करने आते हैं॥

गढ़दीवाला ।

पंजाब के जिला और तहसील हुश्यापुर में एक नगर है जो शक्कर की बड़ी व्योपार की जगह है, यहां देवी का मार्च और सितम्बर में बड़ाभारी मेला होता है, जिस में हजारो लोग आते हैं यहां एक धर्मशाला हैं यक्के और टट्टू हुश्यारपुर से गढ़दीवाले तक मिलते हैं॥

गढ़दीवाला जाने को अच्छा स्टेशन जालन्धर है जहां सवारी मिल जाती है जालन्धर लाहौर से नार्थवैस्टर्न रेलवे में ८१ मील है तीसरे दरजे का किराया ॥।७)। लगता है॥

गढ़मुक्तेश्वर ।

अवध रोहेलखण्ड रेलवे की गाजीयाबाद मुरादाबाद शाख पर मेरठ से २६ मील एक पुराना नगर गंगाजी के दाहने किनारे पर है। असल में यह नगर हस्तनापुर (जो भगवतपुराण और महा भारत में मशहूर है) का एक मुहल्ला था इसका नाम गङ्गादेवी



Photo. by Bourne and Shepherd, Calcutta.

বুদ্ধ—গয়া।

मुकतेश्वर महादेव के नाम से बना है इस मन्दिर में चार जूदे २ स्थान हैं दो पहाड़ी की चोटी के ऊपर और दो नीचे, पास ही ८० सतीयों के लाठ है। कार्तिक में पूरे चांद के मौक़े पर यहां स्नान का मेला होता है जिस में २ लाख के क़रीब लोग आते हैं। यहां ज्यादा ब्राह्मन रहते हैं॥

यांह लकड़ी और बांस के सिवाय जो डेहरादून और गढ़वाल से गंगाजी के रसते आता है और कोई व्योपार नहीं॥

गढ़मुक्तेश्वर दिल्ली से ५४ मील और तीसरे दरजे का किराया ॥=) है॥

गारबेटा।

बङ्गाल नागपुर रेलवे की शाख मिदनापुर भोरिया पर एक स्टेशन है॥

यहां पर सर्वा मंगला और कंगेश्वर शिवजी के बडे ऊचे और पुराने मन्दिर हैं पर यह मालूम नहीं कि कब और किस ने यह मन्दिर बनाए थे, रायकोट में राजा तेजचन्द के महिल के खण्डर हैं अब क़िले का भी काम देते हैं। यहां सोलवहीं या १७ सदी ई० के बने हुए ७ बड़े २ ताल हैं और हर एक के बीच में एक २ मन्दिर है जिन में से शिवजी का मन्दिर सबसे ऊंचा है, इन मन्दिरों में पूजा का खर्च नया ग्राम बंश के लोग देते हैं। स्टेशन से ३ मील के फ़ासले पर एक बंगला है जिस में एक रुपया रोज़ किराया लगता है॥

गारबेटा कलकत्ते से १११ मील है और तीसरे दरजे का किराया १॥≈)॥ है॥

गिरोट।

सूबा पंजाब के ज़िला शाहपुर तहसील खुशाब में गांव है

और इस को सब से नज़दीक खुशाब और हदाली स्टेशन है जो नार्थवैस्टर्न रेलवे (पंजाब लैन) की लाला मुस्सा शेरशाह शाख पर वाक़े हैं, हदाली लाहौर से १६६ मील है और खुशाब १८७ मील तीसरे दरजे का किराया २।)॥। और २ऻ) है ॥

अपरैल के महीनें में बैशाखी के मौक़े पर यहां बड़ा भारी मेला होता है जिस में ४००० के क़रीब लोग आते हैं। यह मेला एक दिन रहता है। रमज़ान के महीने में एक मुसलमान पीर मुहम्मद जमाल का मेला होता है इस में भी बहुत लोग खुशाब, शाहपुर साहीवाल और और इर्द गिर्द के गाओं से आते हैं ॥

इस गांव में हिन्दूओं के लिये दो धर्मशाला और मुसलमानो के लिये एक द्वारा और कई मसजिदें हैं ॥

हदाली में सवारी के लिये ऊंट मिलते हैं ॥

गिरनार पर्ब्बत।

शत्रुंजयापर्बत के बाद गिरनार पर्बत को जैनी लोग बहुत पवित्र मानते हैं। यह पर्वत काठियावार में जूनागाढ़ नगर से १० मील पूर्व की ओर है। पहाड़ी पर चढते हुए रस्ते में ६ विश्राम के स्थान आते हैं, पहाड़ी की पहली चोटी पर अम्बा माता का मन्दिर है यहां नए बिवाहे लोग बहुत आते है दूल्हा और दुल्हन के कपड़े बांधे होते हैं और नाते के लोग साथ होते हैं, देवी को नारयल और और चढ़ावे चढ़ाते हैं और विनती करते हैं कि जोड़ा सदा सुखी रहे ॥

सब से ऊपर की चोटी से ६०० फ़ीट नीचे क़िले की डौल का मन्दिरों का कुण्ड है जिन में से सब से बड़ा और सब से पुराना नेमिनाथ का मन्दिर है। यह मन्दिर एक आंगन में बना है और १६५ फ़ीट लम्बा और १३० फ़ीट चौड़ा है। आंगन के गिर्द ७० मठ हैं जिन

के आगे छत्त वाला रस्ता बना है इन सारे मठों में नेमिनाथ की एक एक मूर्ती रक्खी है ॥

जूनागढ़ गिरनार पर्वत के नीचे बसा हुआ है और भाव नगर गोंडाल जूनागढ़ पोरबंदर रेलवे पर स्टेशनहै बम्बई से इसका फासला वीरम गाम, वधवान् और जतालसर जंकशनों के रस्ते ५५६ मील है और तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में ७।≤) और सवारी गाड़ीमें ५॥।≤) लगता है ॥

जूनागढ़ में एक डाक बंगला है और स्टेशन पर वेटिंग रूम याने गाड़ी के इन्तजार करनेका कमराहै। जूनागढ़ स्टेशन से गिरनार पर्वत पर जाने के लिये डोलियां, बैलगाड़ियां और तांगे मिलते हैं ॥

गुज़रात।

सूबा पंजाब के जिला गुजरात का हेड कुआर्टर और नार्थ वैस्टरन रेलवे की बड़ी लायन पर लाहौर से ७० मील है। लाहौर से तीसरे दरजे का किराया ॥।-) लगता है। इस शहर में एक मुसलमान पीर शाहदौला शाह का बड़ा मशहूर माजार है सिक्खों की दूसरी लड़ाई के सबब भी यह नगर काबिल यादगार है इस लड़ाई से सारा पंजाब अंग्रेज़ों के कबजे में आगया ॥

हाड़ के महीने में यहां शाह जहांगीर साहब का मेला होता है जिस में इर्द गिर्द गांओं से ३ हजार के करीब लोग आते हैं ॥

गुजरातमें पुराने मुकाम देखने के लायक यहहैं, शाही हम्माम, एक शाही बड़ा कुआं जिस में पानी तक सीढ़ियां बनी हुई हैं और शाहदौला पीर का माज़ार। यहां बहुत मुसलमानों की मसजिदें हिन्दुओं के मन्दिर और सिक्खों की धर्मशालायें हैं ॥

गोरे गाऊं ।

बी० बी० ऐंड सी० आइ रेलवे का स्टेशन है और बम्बई से १८ मील है और तीसरे दरजे का किराया≈)॥ है यहां से एक मील के करीब जगेश्वरी का मशहूर खोह का मन्दिर है जो अन्दर से १२० फीट मुरब्बा है ॥

स्टेशन के पास मुसाफिरों के वास्ते एक धर्मशाला है ॥

गोलागोकर्णनाथ ।

अवध के जिला खेड़ी में नगर है और उस सड़क पर वाके है जो लखीमपुर से शाहजहानपुर को जाती है । यह नगर छोटी छोटी पहाड़ियों के नीचे जो आधे घेरे की शकल में है बसा हुआ है पहाड़ियों पर साल के बन हैं और दक्खिन की तरफ एक झील है इस सबब से यह बड़ा सुन्दर मालूम होता है । यहां पर गुसाईं मत का एक स्थान है और उनके महापुरुषों की कबरें हैं, फाल्गुन और चैत्र के महीनों में यहां हिन्दुओं के दो बड़े मेले होते हैं जो पंद्रा २ दिन तक रहते हैं इन में ७५ हजार से एक लाख तक यात्री और व्योपारी इकट्ठे होते हैं ॥

चीनी भी यहां बहुत बनती है ॥

इस नगर में स्टेशन के पास यात्रियों की आराम के लिये ५ धर्मशालायें हैं । यहां कोई डाकबंगला नहीं । गोला गोकरननाथ रुहेल खण्ड कुमाऊं रेलवे की लखनऊ बरेली शाख पर एक स्टेशन है इसका लखनऊ से फासला १०५ मील और तीसरे दरजे का किराया १-)॥ लगता है ॥

गोहटी ।

आसाम बंगाल । बंगाल सन्टरल और ई० बी० ऐस रेलों क जंकशन और आसाम के जिला काम रूप का सब से बड़ा नगर है दरिया ब्रह्मपुत्र के दोनों किनारों पर बसाहुआ है बरपेटा नगर के सिवा इस नगरी की ब्रह्मपुत्र घाटीके सब नगरों से जियादा आबादीहै और दो मुरब्बा मील में फैला हुआ है यहां के लोग कहते हैं कि पिछले जमाने में यह ही प्रयागज्योतिषापुर था और राजा नरक और उस के पुत्र भगदाता जिनका जिकर महाभारत मेंहै उनकी राजधानी था, पुराने पुश्ते और बहुत से किलों के निशान अब तक मौजूद हैं जो ब्रह्मपुत्र दरिया के किनारों पर है ॥

इस नगर के पासही कामाख्या या दुर्गा का मन्दिर है जहां हिन्दू लोग अकसर यात्रा के लिये आते रहते हैं नगर के सामने दरिया ब्रह्मपुत्र के बीच में एक चटानी टापू पर उमानन्द या शिवजी का मन्दिर है इस को भी हिन्दूलोग बहुत पवित्र मानते हैं ॥

पहले यहां छावनी थी पर बाद में उठा ली गई थी, आसाम ७ वह नगर बड़े ब्योपार की जगह है ॥

गौहटी चिटागांग से ४८० मील है तीसरे दरजे का किराया ७॥) लगता है ॥

गंगोत्री ।

सूबा आगरा और अवध की रियासत गढ़वाल में एक पहाड़ी मन्दिर है जो भागीरथी या गंगाजी के दाहने किनारे पर वाके है सागर में गंगाजी का मुख और उसका निकास गंगोत्री में खास कर पवित्र ख्याल किये जातेहैं । दरिया के निकाससे ८ मीलके फासले पर मन्दिर है जिस में गंगाजी और भागीरथी की मूर्तियां हैं । यात्री

लोग इस जगह को अपने सफर की हद समझते हैं और इस जगह रहने के लिये कोई घर नहीं इस वास्ते यात्री लोग दरिया में से पानी लेकर जलदी लौट आते हैं ॥

गंगोत्री पहुंचने के लिये सब से नजदीक रोहेल खण्ड कमाऊं रेलवे पर काठगोदाम स्टेशन है जो बरेली से ६६ मील और लखनऊ से २६५ मील है तीसरे दरजे का किराया इन दोनों जगह से १।) रुपया और ३=) हैं ॥

हरिद्वार से भी गंगोत्री जाते हैं वहां झम्पान सवारी के लिये मिल सक्ते हैं ॥

हरिद्वार सहारनपुर से ४६ मील है तीसरे दरजे का किराया ॥=)। लगता है ॥

घुम्मनपिंडोरी ।

नार्थवैस्टरन रेलवे की अमृतसर पठानकोट शाख पर। बटाला स्टेशन के पास गांव है यहां जनवरी के महीने में हरसाल नामदेव का बड़ाभारी मेला होता है जो तीन दिन तक रहता है। इस में २० हजार के करीब लोग आते हैं ॥

बटाला अमृतसर से २४ मील है तीसरे दरजे का किराया ।)॥ लगता है। बटाले में यक्के सवारी के लिये मिलते हैं ॥

चम्पा ।

बंगाल अहाते में हालदेव दरिया पर चम्पा रियासत का बड़ा नगर है। इस के उत्तर पश्चिमकी तरफ दो मील के फासले पर पीतनपुर गांव है जिस के पास शिव पित्तियेश्वरका मन्दिर है। होली के मौके पर महादेव देवता को बड़े चढ़ावे चढते हैं। कहते हैं कि

यह देवताशरीर के कुल रोग उसी दम अच्छे कर देता है। बारह बर्ष हुए कि मेला शुरू किया गया था, जो हर साल बढ़ता जाता है। कोरवा गांव जहां कहते हैं कि कोयले की खानें हैं चम्पा के पास वाक़े है॥

चम्पा रेलवे स्टेशन के पास एक सराए है और पबलिक वर्कस डीपार्टमेंट का बंगला थोड़े फ़ासले पर है पर पीतनपुर में अंगरेज़ी और देशी लोगों के टिकने के लिये कोई जगह नहीं लोगों को आप बन्दोबस्त करना पड़ता है॥

पीतनपुर गांव जाने के लिये चम्पा में बैल गाड़ियां मिलती हैं।

चम्पा बंगाल नागपुर रेलवे कलकत्ते से ४१२ मील है-तींसरे दरजे का किराया ४॥) लगता है॥

चन्दोद।

गुजरात काठियावार की गायकवाड रियासत में दबहोई नगर से १० मील दक्खिन की तरफ़ नर्बदा दरया के किनारे पर एक गांव और तीर्थ की जगह है। दक्खिन में यह तीर्थ सब से ज़ियादा पवित्र माना जाता है। यहां और कुरनाली में बड़े २ मेले कार्तिक और चैत्र के महीनों में होते हैं जिनमे २० हज़ार से २५ हज़ार तक यात्री आते हैं। इस गांव में दो धर्मशाला भी हैं॥

चंदोद बम्बई बड़ोदा एण्ड सैंटरल इण्डिया और गायकवाड दबहोई रेलवे में विश्वामित्री के रस्ते बम्बई से २७६ मील है तीसरे दरजे का किराया ३।७) लगता है॥

चिंगलिपत।

अर्थात् ईंटों का नगर यह नगर अहाता मदरास के ज़िला

चिंगलिपत का बड़ा शहर और साऊथ इण्डियन रेलवे की अरकोनाम बरांच का स्टेशन है। मदरास बीच जंकशन स्टेशन से इस का फ़ासला ३७ मील है और तीसरे दरजे का किराया।=)॥ लगता है। स्टेशन पर पहले और दूसरे दरजे के मुसाफ़िरों के लिये वेटिंगरूम और अंग्रेज़ों और देशियों के लिये खाने के कमरे बने हैं। स्टेशन पर यक्के और बैल गाड़ियां मिलती हैं। महाबलीपुर या सात पगोड़ों को यहां से आसानी से जा सक्ते हैं। तीरुकलुकुन्दरम का शिवजी का मन्दिर चिंगलिपत से ६ मील दक्खिन पूर्व की तरफ़ है। इस के दर्शन को यात्री लोग साल भर बहुत आते हैं। इस मन्दिर के पास ६ चतरम हैं। चिंगलिपत से १६ मील उत्तर पुर्व की तरफ़ तीरुप्पोरूर जगह है जिस में सबरा मान्या स्वामी का मन्दिर है इस के दर्शन को भी किरथी के तेहवार पर अनगिनत यात्री आते हैं॥

यहां जिलेकी कचहरी, जेल क़ैदियों का स्कूल, असपताल मौजूद हैं

चिंचवद ।

जी० आई० पी रेलवे की बम्बई रायचूर शाख पर एक स्टेशन और गांव है, बम्बई से फ़ासला १०६ मील और तीसरे दरजे का किराया १॥=) है॥

स्टेशन के पास दो बड़े मन्दिर हैं एक गांव में जिस को मोराया गुसांई का मन्दिर कहते हैं और दूसरा पौना दरया के किनारे पर है और श्री गणपति का मन्दिर कहलाता है। दूसरे मन्दिर के दर्शन को यात्री लोग बहुत आते रहते हैं। दिसम्बर के महीने में इस मन्दिर का बड़ा भारी मेला होता है जो तीन दिन तक रहता है।

श्रीगनपति के मन्दिर पास एक धर्मशाला भी है॥

चिदमबरम या चितमबलन।

अर्थात् बुद्धि की हवा। यह ज़िला दखिनी अरकाट की चिदमबरम तहसील में बड़ा नगर और साऊथ इण्डियन रेलवे का स्टेशन है। इसका फ़ासला मद्रास बांच जंकशन स्टेशन से १५४ मील है तीसरे दरजे का किराया १॥।) लगता है। यह नगर मन्दिरों के सबब बहुत मशहूर है। सब से बड़ा मन्दिर सभानेकन कोविलया कनक सभा (सुनैहरी मन्दिर) शिवजी और पार्वती का है। कहते हैं कि इस मन्दिर के पुराने हिस्से सुनहरी रंग के राजा हिरान्यवर्नो बकरास्तों ने बनवाये थे क्योंकि उसका कोढ़ इस जगह एक तालाब में नहाने से जाता रहा था। यह मन्दिर ३९ एकड़ पर बने हुए हैं उनकी लम्बाई ६०० गज़ और चौड़ाई ५०० गज़ है। इर्द गिर्द ३० फुट ऊंची दो दीवारें बनी हुई हैं, और चारों कोनों पर १२२ फ़ीट ऊंचा एक एक गपूरा है, कहते हैं, कि पतंजली, व्याघ्रहपद, उपामान्या और दूसरे ऋषि इस जगह रहते हैं पर नजर नहीं आते॥

इस नगर में संस्कृत स्कूल। दो अंग्रेज़ी स्कूल एक पुत्री पाठशाला है और कई और पाठशालायें हैं जिन में बेद पढ़ाये जाते हैं। यहां कई चोलतरियां और चत्तरम भी है जिन में से आठ कुशादा और अच्छी हैं इन में से सब से बढ़ कर नट्टूकोटई चत्तरम है जहां बैरागियों और ब्राह्मनों को रोज़ खाना दिया जाता है॥

चिदमबरम में दो बड़े तेहवार जून और दिसम्बर में होते हैं उन दिनों में ३० हज़ार से ४० हज़ार तक यात्री आते हैं, चिदमबरम के पश्चिम की तरफ़ बरिउदाचलम, मन्नारगुदी और श्रीमुश्नम भी यात्रा की नामी जगह हैं॥

रेशम का कपड़ा और कली (कैली कपड़े को उस इलाक़े के मुसलमान पहनते हैं) चिदम्बरम में बन्ता है ॥

स्टेशन पर यक्के और बैल गाड़ियां सवारी के लिये मिलती हैं नगर में भी जो स्टेशने से चौथाई मील के क़रीब है बैल गाड़ियां मिलती हैं ॥

चित्तौड़ गढ़।

राजपूताना मालवा और उदैपुर चितौड़ रेलवे का जंकशन (मिलने की जगह) है और नीमच से ३५ मील और अजमेर से ११५ मील के फ़ासले पर उदैपुर रियासत में वाक़े है। चित्तौड़गढ़ का मशहूर क़िला एक अलग पहाड़ी पर है जो मैदान से ५०० फ़ीट ऊंची है और ३॥ मील के करीब उत्तर और दक्खिन की तरफ फैली हुई है तारीख़ दोनों के लिये यह बड़ी मन भावनी जगह है क्यों कि तुन्द राजपूतों की आज़ादी के वास्ते बड़ी २ लड़ाइयां यहां हुई थीं। १२९० में लक्ष्मी के राज में चित्तौड़ पर अलाउद्दीन खिलजी ने चढ़ाई करके इसको फ़तह किया इस मौक़े पर हज़ारों राजपूत औरतों ने अपनी पत रखने के लिये आत्मघात कर लिया इन में खूबसूरत रानी पदमनी भी थी, जिस के वास्ते अलाउद्दीन ने चढ़ाई की थी। पहाड़ी पर अब भी कई पुराने मन्दिर तालाब और घर देखने के लायक़ हैं ॥

चित्तौड़या या छोटा चित्तौड़ पास ही दक्खिनी तरफ़ को है, यह छोटी सी पहाड़ी है पर दुशमनों को यहां से क़िले पर गोले मारन को अच्छा मौक़ा मिल जाता था। यह पहाड़ी स्टेशन से दो मील के फ़ासले पर है। पर गाऊं के लम्बरदार से सांडनियां टट्टू और बैल गाड़ियां सवारी के वास्ते मिल सक्ती हैं ॥

स्टेशन के पास उदैपुर राज का बनाया हुआ डाक बंगला है पर यहां कोई सराय या धर्मशाला नहीं लोग स्टेशन के पीछे बाज़ार में खाली दुकानों में ठहरते हैं ॥

चित्तौड़गढ़ बम्बई से ५२६ मील और अजमेर से ११६ मील है तीसरे दरजे का किराया ४॥) और १=) लगता है ॥

चित्राकोट ।

चित्राकोट स्टेशन से इसी नाम का मशहूर पर्ब्बत ३॥ मील है और बड़ी यात्रा की जगह है, जितने यात्री यहां आते हैं बुन्देलखंड में और किसी जगह नहीं जाते, राजा रामचन्द्र जी अपने बनवास के दिनों में यहां आये थे जबसेही यह जगह पवित्र समझी जाती है महाभारत में भी इसका जिकर है। रामचन्द्र जी सीता जी और लक्ष्मण के पाओं के निशान परिकर्म्मा पर चर्ण पदिकर मन्दिर में अब तक हैं ॥

पहाड़ी के गिरद एक चबूतरा है जिस पर यात्री लोग परिक्रमा करते हैं। यह चौतड़ा पन्ना के राजा रामचन्द्र कुंवर ने डेढ़ सौ बरस हुए बनाया, था इर्द गिर्द की छोटी छोटी पहाड़ियों पर, पैसूनी नदी के किनारे, घाटी और मैदान में ३३ पूजा पाठ की जगह हैं। जिन में से हरएक जूदा २ देवता के नाम पर है। इन में से ७ कोट तीर्थ दीवान गंगा, हनूमान धारा, फटकसिला, अन्सविया। गुप्त गोदावरी और भारत कूप ५ कोस के गिरदे में हैं और पांच कोसी तीर्थ कहलाते हैं। यहांपर यात्री और जगहों से जियादा स्नान और तप करने के लिये आते हैं। इन में से बहुत से तीर्थ बुन्देलखण्ड की छोटी २ रियासतों में हैं ॥

चित्राकोट में मार्च अपरैल और अक्तूबर नवम्बर में राम नौमी और दीपमाला के बड़े भारी मेले होते हैं। नए चन्द्रमा और ग्रहण के मौकों पर भी छोटा सा मेला होता है॥

चित्राकोट जी० आई० पी० रेलवे में झांसी से १५७ मील है तीसरे दरजे का किराया २=) लगता है॥

चिन्तपुरनी।

पंजाब के जिला हुश्यारपुर में एक पर्ब्बत है जो बिना सिर की देवी के मन्दिर के सबब बहुत मशहूर है। मार्च के महीने में अनगिनत यात्री दूर २ से यहां आते हैं॥

हुश्यारपुर में यक्के चिन्तपुरनी जाने के लिये मिल जाते हैं। मामूली किराया एक यक्के का १=) पड़ाओं के हिसाब से लगता है पर मेले के दिनों में किराया बहुत बढ़जाता है॥

चिन्तपुरनी के लिये सब से पास जालन्धर स्टेशन है जो नार्थवैस्टरन रेलवे पर लाहौर से ८१ मील है लाहौर से जालन्धर तक तीसरे दरजे का किराया ॥।=)। लगता है॥

चिनियोट।

सूबा पंजाब के जिला झंग में तहसील चिनियोट का हैडकुआटर है और चनाब दरिया से २ मील दक्खिन की तरफ वाके है। नगर स्टेशन से १६ मील है पर स्टेशन पर यक्के नगर को जाने के लिये मिलते हैं एक सवारी का किराया ॥।) लगता है यह नगर मुसलमानों के हिन्दुस्तान में आने से पहले बसा था दूरानी के हमल और १८४८ के आपस के झगड़ों से इस को बहुत नुक़सान

पहुंचा। अब फिर रौनक पर है, बहुत से घर पक्के ईंटोंके बड़ेसुन्दर बने हुए हैं। यहां के खोजे धनवान् हैं अमृतसर, कलकत्ता, कराची और बम्बई में उनकी कोठियां हैं। नबाब सादुल्ला की जो शाहजहान के राज्य में यहां का हाकिम था बनाई हुई एक बड़ी सुन्दर मसजिद् भी है और एक मुसलमान वलीशाह बुर्हान का मज़ार है जिस को हिन्दू और मुसलमान दोनों मानते हैं। चिनियोट लकड़ी और राज गोरी के काम के लिये बहुत मशहूर है कहते हैं कि आगरे में ताज-महल बनाने के लिये बहुत से राज चिनियोट से गए थे। अमृतसर का दर्बार साहब भी एक चिनियोट के राजा ने बनाया था। यहां एक बड़ा सुन्दर बाग है जिस में मेवों के दरख़्त बहुत हैं॥

चिनियोट में देशी कपड़ा बनता है यहां से रुई, लकड़ी, घी हड्डियां, सींग, और चमड़ा बाहर जाता है। नगर में एक अच्छी सराय और कई धर्मशालायें हैं॥

चिनियोट रोड लाहौर से १४६ मील है तीसरे दरजे का किराया वज़ीराबाद के रस्ते १॥≈)॥ लगता है॥

चितूर।

नार्थ अरकाट ज़िले में चितूर तालुक का हैडकुआरटर और साऊथ इण्डियन रेलवे का स्टेशन है। मद्रास बीच जंकसन से इस का फासला २२१ मील है। और तीसरे दरजे का किराया २।≈) लगता है। स्टेशन से पौने मील के फासले पर एक बंगला और देशियों के लिये दो चत्तरम या धर्मशालायें हैं। लाल पत्थर यहां से बाहर जाते हैं॥

इन्द्रपुरीमें जिस को लोग यदाशारी कहते हैं श्रीबद्राजा स्वामी और कोटन्द्रस्वामी के बड़े मशहूर मन्दिर हैं। इन्द्रपुरी स्टेशन से ५ मील है। मई के महीने में यहां एक बड़ाभारी तेहवार दस दिन तक होता है जिस में अनगिनत लोग आते हैं॥

छप्पर।

तहसील और जिला लुधियाना में गांव है और नार्थवैस्टर्न रेलवे की शाख लुधियाना धुरी जाखल का स्टेशन है लुधियाना जंकशन से १७ मील और जाखल जंकशन से ६४ मील है तीसरे दरजे का किराया ≈)। और ॥।) है। लुधियाना फ़िल्लौर से ६ मील है और तीसरे दरजे का किराया ‑)॥। है॥

सितम्बर के महीने में (तारीखका ठीक पता नहीं) यहां गुग्गे का बड़ाभारी मेला होता है जो तीन दिन तक रहता है इस मेले में इर्द गिर्द के गावों और देशी रियासतों से ७५ हजार के करीब लोग आते हैं यहां के लोगों का ख्याल है कि जो कोई गुग्गे की पूजा न करे उसके बच्चे सर्प के काटने से मरते हैं, मन्दिर के अन्दर एक छेद है जिस में से ठंडी हवा आती है पुजारी लोग कहते हैं कि यह हवा गुग्गे के सांस लेने से आती है॥

गांव स्टेशन से २॥ मील है लोगों को वहां तक पैदल जाना पड़ता है क्योंकि यहां पक्की सड़क नहीं और न कोई सवारी मिलती है गांव में कोई सराये या धर्मशाला नहीं॥

छीपिया।

अवध के जिला गोंडा में एक छोटा सा गांव है यहां सहजानन्द विष्णुमत के सुधारनेवाले का बड़ा सुन्दर मन्दिर है, सौ

साल के करीब हुए सहजानन्द ने इसी गांव में जन्म लिया था और होते होते जूनागढ़ के विष्णु स्थल का सरदार उस के आधीन हो गया कहते हैं कि वह ऋषि था और कृष्ण जी का अवतार था और स्वामी नारायण के नाम से उस की पूजा करते हैं॥

५० वर्ष के करीब गुज़रे कि उस के मानने वालों ने उस की जन्म भूमि पर मन्दिर बनाया जो सारा मिरजापुर और जयपुरी संगमरमर का है। मन्दिर की पिछली तरफ एक बड़ा बाजारहै और दो चौकोने ईंटों के घर हैं जिनके कोनों पर प्रोहतों के लिये बुर्जियां बनी हैं। यहांपर दो बड़े मेले होते हैं, एक रामनौमी पर और दूसरा कातिक महीने के पूरे चांद के मौके पर इन मेलों में हिन्दुस्तान के दूर २ के हिस्सों से यात्री आते हैं॥

जखलौन।

बम्बई से ६३६ मील और दिल्ली से ३२२ मील के फासले पर जी० आई० पी० रेलवे पर स्टेशन है। बम्बई से तीसरे दरजे का किराया ७८) और दिल्ली से ४।) लगता है। इस स्टेशन से ८ मील देवगढ़ के खण्डर देखने के लायक हैं वहां तक कच्ची सड़क जातीहै पर मुसाफिरों को सवारी और खानेका आप बन्दोबस्त करना चाहिये इन खण्डरों में गुप्ता के जमाने का एक बड़ा अजीब मन्दिर है और एक जैनियों के मन्दिरों का सुन्दर कुण्ड एक पहाड़ी पर घने जंगल में है जिस को बेतवा दरिया से पत्थर की सीढ़ियां जाती हैं। जूलज

जब्बलपुर ।

ई० आई० आर० और जी आई० पी० रेलवे का जंकशन है। स्टेशन पर देशियों और अंगरेजों के लिये वेटिंग रूम याने मुसाफिर खाने बने हुए हैं और पास ही एक सराय है। देशीबस्ती और छावनी के बीच में से रेल गुजरती है। गाड़ियां तांगे और यक्के स्टेशन पर मिलते हैं। यहां कमिश्नर, डिप्टी कमिश्नर, असिसटेंट कमिश्नर इञ्जिनियर, तार के अफसरों की कचहरियां और दफ़्तर हैं ईसाईयों के गिरजे और स्कूल और कालिज भी हैं, कालिज में सूबाजात मुतअ़ल्लिकके बहुत से राजोंके लड़के पढ़ने आतेहैं। जब्बलपुर की छावनी बड़ी भारी है। यहां अंगरेजी और देशी पलटने, तोपखाना और सवारों का दस्ता रहता है। जब्बलपुर में ठगी जेल और दस्तकारी का स्कूल देखने लायक है। स्कूल में खेमें, गलीचे और मोटा कपड़ा बनकर बिकता है। यहां से मार्बल राक्स याने संगमरमर की चाटाने देखने के लिये सवारी मिलती है। चटाने यहां से ११ मील हैं। जब्बलपुर बम्बई से ६१६ मील और कलकत्ते से ७३३ मील है तीसरे दरजे का किराया बम्बई से डाकगाड़ी में ६॥ﾉ और सवारी गाड़ी में ६।ﾉ और कलकत्ते से ६॥ﾉ। हैं॥

जरग ।

नार्थ वैस्टर्न रेलवे के दोराहा स्टेशन से १४ मील के फासले पर एक गाऊं है। यहां मार्च के महीने में शीतला का मेला होता है जिस में ५ हजार के करीब हिन्दूलोग आते हैं।

जरग में कोई सराय या धर्मशाला नहीं और न दोराहा स्टेशन पर जरग जाने के लिये कोई सवारी मिलती है॥

दोराहा लाहौर से १२० मील और दिल्ली से २११ मील है तीसरे दरजे का किराया १।)॥ और ४।-) लगता है ॥

जलगांव।

जी० आई० पी० रेलवे पर स्टेशन और अमालनर जलगाऊं शाख का जंकशन है। नगर स्टेशन से एक मील के क़रीब है स्टेशन पर वेटिंग रूम (मुसाफ़िर ख़ाना) है और पास ही एक डाकबंगला और देसी मुसाफ़िरों के लिये सराये है। गरना दरया नगर के पश्चिम की तरफ़ बहता है और स्टेशन से ३॥ मील के फ़ासले पर उसपर एक पुल बना हुआ है। हर हफ़ते एक बड़ा भारी बाज़ार लगता है जिसमें खांदेश के सब हिस्सों से पैदावार बिकने आती है। स्टेशन से दो मील के क़रीब एक बड़ी भारी झील है जिस को मेहरुनी कहते हैं। जलगाऊं खांदेश में बड़े ब्योपार की जगह है। यहां कई रूई निकालने और कातने की कलें हैं रूई और सूती कपड़ा बहुत बाहर जाता है ॥

अजन्टा की खोहों के मन्दिरों को जो रेलवे स्टेशन से ३८ मील है जलगांऊं से अच्छी सड़क जाती है। टट्टू छकड़े और बैल गाड़ियां मामलतदार को पहिले से लिखने से मिल सक्ती हैं। यह खोहें पहाड़ काट कर बनाई गई हैं और देखने के लायक़ है इनके अन्दर बहुत अजीब बेल बूटे बने हुए हैं इन खोहों का ज़ियादा हाल अजन्टा के नीचे लिखा आ चुका है॥

जलगाऊं बम्बई से २६१ मील है डाक गाड़ी में तीसरे दरजे का किराया ४-) और सवारी गाड़ी में २॥।) लगता है ॥

ज्वालामुखी ।

सूबा पंजाब के ज़िला कांगड़ा, तहसील देहरा में पुराना नगर है। किसी ज़माने में यह बड़ा भारी और धनवान् नगर था पुराने खंडरों से भी मालूम होता है। इसमें एक बड़ा पवित्र मन्दिर हैं जिसको लोग लाटांवाली देवी का मन्दिर कहते हैं इस मन्दिर के अन्दर सदा अग्नि की लाट निकलती है। सितम्बर के महीने में यहां बड़ा भारी मेला होता है जिस में हिन्दुस्तान के सब हिस्सों से ५० हज़ार के क़रीब यात्री आते हैं। इस नगर के पास गरम पानी के सोते भी हैं॥

ज्वालामुखी में ८ धर्मशालायें यात्रियों के ठहरने के लिये हैं एक सराय भी महाराजा पटियाला की बनाई हुई है॥

ज्वालामुखी के लिये नार्थवैस्टर्न रेलवे की अमृतसर पठानकोट शाख का पठानकोट स्टेशन सब से पास है वहां यक्के मिलते हैं बहुत लोग जालन्धर से भी हुशियारपुर के रस्ते ज्वाला जी जाते हैं। हुशियारपुर और जालन्धर में यक्के वहुत मिलते हैं। पठानकोट अमृतसर से ६७ मील है तीसरे दरजे का किराया ॥)॥ लगता है जालन्धर लाहौर से ८१ मील है और तीसरे दरजे का किराया ॥।≈)। है

जाजपुर ।

अहाता बंगाल के ज़िला कटक में बैतरनी नदी के किनारे पर है और जाजपुर सब डवीज़न का सदर मुक़ाम है। केसरी बंश के राज्य में यह सब से बड़ा नगर था। ग्यारहवी सदी ईस्वी में कटक राजधानी बनाया गया। यहां शिवजी के सेवक ब्राह्मण वहुत रहते हैं और यह जगह उड़ीसा के बड़े चार तीर्थों में से है॥

जाजपुर में शिवजी के मन्दिरों के बहुत से खंडर हैं। यह नगर उड़ीसा में पांचवें दरजे पर है और वारुनी के मेले पर अनगिणत यात्री पवित्र नदी वैतरनी में स्नान करने के लिये आते हैं। उन दिनों में जाजपुर में बहुत धन आता है।

जाजपुर बंगाल नागपुर रेलवे पर है। इसका फासला हौड़े से २०२ मील है और तीसरे दरजे का किराया २॥≈)॥ लगता है॥

जालन्धर।

पंजाब में जिला और कमिश्नरी जालन्धर का सदर मुकाम है और नार्थवैस्टर्न रेलवे पर लाहौर से ८१ मील और दिल्ली से २६८ मील है। तीसरे दरजे का किराया ॥|≈)॥ और २॥≈) है॥

जालन्धर बड़ा पुराना शहर है और सिकन्दर के हमले से पहले कटोच राज्य की राजधानी थी, कटोच का जिकर महाभारत में भी है। उस पुराने आर्य्या नगर की निशानी अब एक तालाब बाकी है जिसको देवी तालाब कहते हैं॥

जून के महीने में एक मुसलमान महात्मा इमामनासरुद्दीन के रौजे पर मेला होता है। जो चार दिन तक रहता है, इस मेले में ४ हजार के करीब लोग आते हैं। और बड़े दिन की छुट्टियों में एक हिन्दू साधू की यादगार में राग का जलसा होता है जो साधु के नाम पर हर बल्लभ का जलसा कहलाता है। यह साधु हिन्दुस्तान देश में राग का उस्ताद् माना जाता है। जलसे पर देश २ के रागी दूर दूर से आते हैं जिनकी खातिरदारी के वास्ते रुपया इकट्ठा किया जाता है रियासत कपूरथले से भी बहुत रुपया मिलता है। हजारों लोग इस जलसे में आते हैं॥

शहर में दशहरे का मेला भी बड़ी धूम धाम से होता है उस मौके पर बड़ी भारी मालमण्डी लगती है ॥

शहर में कई धर्मशाला और तीन सरायें हैं एक सराए स्टेशन से थोड़े गज के फासले पर है ॥

छावनी शहर से ४ मील है। छावनी और शहर में सवारी हर वक़्त मिलती है ॥

जालन्धर से रेशम बाहर जाता है और लकड़ी का काम बहुत अच्छा होता है ॥

जेजूरी।

पूना से ३२ मील के फासले पर एक गांव है। यहां खण्डोबा का मन्दिर है जो बम्बई अहाते में बहुत पवित्र माना जाता है और हजारों यात्री इस के दर्शन को आते रहते हैं। कहते हैं खण्डोवा राजा था कभी कभी उसकी मूर्ति घोड़े पर सवार बनाई जाती है और उसकी रानी और कुत्ता साथ होता है। जिन लोगों के बच्चे नहीं होते वह यहां आकर वचन कहते हैं कि उनके बच्चे होजायें तो पहिला बच्चा खंडोवा को चढ़ायेंगे। अगर लड़का होता है तो खंडोवा का कुत्ता कहलाता है और खुल्ला फिरता है और जो लड़की हुई तो मामूली पवित्रता के बाद तपा के उस के मोहर लगाते हैं और फिर बड़ी धूमधाम से देवता के साथ उसका विवाह कर देते हैं

पूना से जैजूरी तक तीसरे दरजे का किराया डाकगाड़ी में ।=)॥। और सवारी गाड़ी में ।-)। लगता है ॥

जयपुर।

रियासत जैपुर या अमबर की राजधानी और हिन्दुस्तान में

बड़ा सुन्दर और सुहावना नगर है । इस की लम्बाई दो मील और चौड़ाई एक मील है । इर्द गिर्द पक्की दीवार बनी हुई है जिस पर ऊंची ऊंची बुर्जियां हैं और बीच में मज़बूत दर्वाजे हैं इस नगर का बड़ा बाज़ार ४० गज़ चौड़ा और एक सिरे से दूसरे सिरे तक सीधा चला गया है दूसरे बाजार जगह जगह इस से आ मिलते हैं और मिलने के मुकाम पर खूबसूरत चौक बने हुए हैं ॥

महाराज साहिब का महल शहर के बीच में है । इसका घेरा और बाग़ आधे मील तक चले गये हैं। बाग़ में .फवारे, भांति भांति के दरख़्त, फुलदार पौदे लगे हैं और चबूतरे बने हैं । महल के अन्दर दीवान खास, दीवान आम, और सुख निवास बहुत खूब सूरत हैं इन के सिवाय देखने के लायक यह मुकाम हैं ॥

(१) आम लोगों की सैर के बाग़ जो ७० एकड़ में फैले हुए हैं और डाक्टर डिफेबेक की तजबीज से ४ लाख रुपये के खर्च से बनाए गये हैं हिन्दुस्तान में यह बाग़ सब से खूबसूरत है ॥

(२) मेओ अस्पताल ॥

(३) अैलबर्ट हाल जिस को करनल जेकबने तजबीज़ किया था और जिस में जैपुर का अजायब घर है ॥

(४) दस्तकारी का स्कूल ॥

(५) टकसाल ॥

(६) हवा महल ॥

(७) राम निवास बाग़ और चिड़िया घर । यहां हर सोमवार की शाम को अंग्रेजी बाजा बजा करता है ॥

(८) कालेज ॥

(९) सैंटरल जेल ॥

रियासत की पुरानी राजधानी अम्बर भी जो यहां से ७ मील है देखने के लायक है पर इस के देखने के लिये रेज़ीडंट साहिब की

कमेला घाट कलकत्ते से ३४ मील है तीसरे दरजे का किराया।॥ आने लगता है ॥

तलेगाऊं ।

ग्रेट इण्डियन पेनिनशुला रेलवे पर स्टेशन है। स्टेशन पर वेटिंगरूम बना हुआ है और गाऊं में देशी मुसाफिरों के वास्ते एक धर्मशाला है। तलेगाउं में हर साल अपरैल के महीने में मेला होता है। अलंदी में भी जो यहां से १४ मील है हर साल नवम्बर और जून में मेले होते हैं इन में इर्द गिर्द के गाओं से बहुत हिन्दू आते हैं। इन्द्रायनी दरिया स्टेशन से डेढ़ मील के फासले पर बहता है और स्टेशन से ३ मील दक्खिन पूर्व की तरफ एक पुराने किले इन्दूरी के खंडर हैं। तलेगाऊं बम्बई से ६८ मील है तीसरे दरजे का किराया १॥-) लगता है ॥

तदपतरी ।

मदरास रेलवे का स्टेशन है और नगर में राजा रामचन्द्र जी, ईश्वर और चितराया के मन्दिर हैं जिन को बिजाया नगर के राजों ने ४०० बरस के करीब हुए बनाया था इन में बड़ा संगत्राशी का काम किया हुआ है जिस से रामचन्द्र जी कृष्ण जी और और देवताओं के युद्धों का हाल मालूम होता है। एक और मूरत है जिस के हाथ में कमान है। गाउं में धर्मशाला है। यहां एक डाक बंगाला भी है ॥

तदपतरी मदरास से २२८ मील है तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में ३) और सवारी गाड़ी में २।) लगता है ॥

तरण तारण।

पञ्जाब के ज़िला अमृतसर तहसीलतरण तारण का सदर मुक़ाम है। इस को गुरू रामदास के लड़के गुरू अर्जुन ने बसाया था गुरु अर्जुन ने नगर के अन्दर एक तालाब बनाया और उसके किनारे पर सिक्खों का का मन्दिर बनवाया कहते हैं कि जो लोग तैर कर इस तालाब के पार चले जाते हैं उनका कोढ़ दूर होजाता है। महाराजा रणजीतसिंह इस मन्दिर का बड़ा आदर करता था उसने इस के ऊपर सुनहरी तांबे का पत्तरा चढ़वाया और इस को खूब सजाया॥

अपरैल के महीने में यहां चैत चौदश का मेला होता है जिस में अमृतसर शहर, ईर्द गिर्द के गात्रों और लाहौर, फ़ीरोज़पुर जालंधर और गूरदासपुर के ज़िलों से एक लाख के क़रीब लोग आते हैं। मार्च और अगस्त के महीनों में सोमावति अमावस्या और भदरी अमावस्या के मेले भी होते हैं पहले में ६० हज़ार और दूसरे में एक लाख से भी ज़ियादा लोग आते हैं॥

तरण तारण में कचहरी, डाकखाना, थाना, स्कूल, अस्पताल और सरायें हैं और बाहर कोढियों के लिये एक घर बना हुआ है॥

यह नगर नार्थवैस्टर्न रेलवे की अमृतसर पट्टी शाख पर है। इसका फ़ासला अमृतसर से १५ मील है और तीसरे दरजे का किराया ≈)॥। लगता है॥

तंजोर।

यह नगर कावेरी के डेलटा (दरिया में उस जगह को कहते हैं जो तीन कोनी हो) यह ऐसी जगह बसा हुआ है जिस के सुन्दर होने के सबब इस को दक्खिनी हिन्दुस्तान का बाग़ कहते हैं। इस के ईर्द गिर्द खेतों को पानी देने के वास्ते बहुत सी नहरें बनी हुई हैं।

तंजोर चाला बंश के राजों की सब से आखरी राजधानी थी उस के बाद बिजाया नगर की तरफ से नायक इस का हाकम हुआ, १६५६ और १६७५ के बीच में मरहट्टों के हाथ में रहा, १७७६ में तंजोर की रियासत अंगरेज़ो के पास आगई और सिवाजी के मरने के बाद राज धानी भी १८८५ में अंगरेज़ों के हाथ में आगई ॥

यह नगर मन्दिरों के सबब बहुत मशहूर है। सब से बड़े मन्दिर के दो आंगन हैं। एक बाहर जो २५० फ़ीट चौकोर है और दूसरा अन्दर का जो ५०० फ़ीट लम्बा और २५० फ़ीट चौड़ा है इसी के बीच में मन्दिर है जिसकी बीच की बुर्जी हिन्दुस्तान में सब बुर्जियों से सुन्दर है। यह बुर्जी जड़ के पास चारों तरफ़ ६६ फ़ीट है और ऊंचाई २०८ फ़ीट है। ऊपर का बड़ा गोल गुम्बद एक ही पत्थर का है। कहते हैं के इस बड़े भारी पत्थर को चढ़ाने के लिये ५ मील तक जमीन ढालू की गई थी ॥

दरवाजे की बुर्जी मन्दिर के सब हिस्सों से पुरानी है और शिव जी के नाम पर है, इस को कोलवर्म के एक राजा ने १३३० ई० में बनाया था। बड़े दरवाजे और मन्दिर के बीच में शिवजी के बैल नन्दी का मन्दिर है। बैल की मूर्ति पक्के पत्थर को काट कर बनाई गई है और १६ फ़ीट लम्बी और १२ फ़ीट ऊंची है। इस मूर्ति को रोज़ तेल मला जाता है जिस से यह कांसी की तरह चमकती है। इस मन्दिर में अनूठी बात यह है कि गपूरों पर विष्णु की मूर्तियां बनाई हुई हैं पर आंगन में सब शिवजी की मूर्तियां हैं ॥

बड़ी बुर्जी के उत्तर की तरफ़ शिवजी के पुत्र सब्रह्मानिया का मन्दिर है इस पर बेल बूटे का बड़ा सुन्दर काम किया हुआ है इस की बाहर की दीवार के साथ एक पानी की नलकी है जिस का

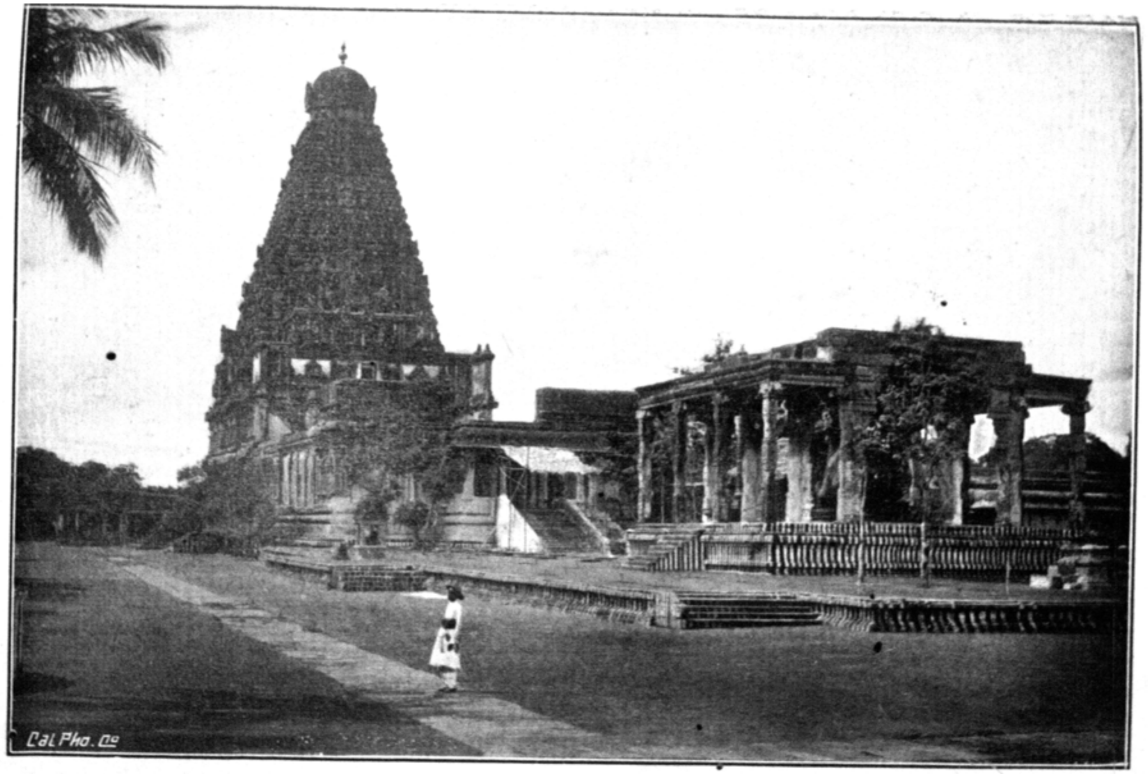


Photo. by Bourne and Shepherd, Calcutta.

तंजोर का बड़ा मन्दिर ।

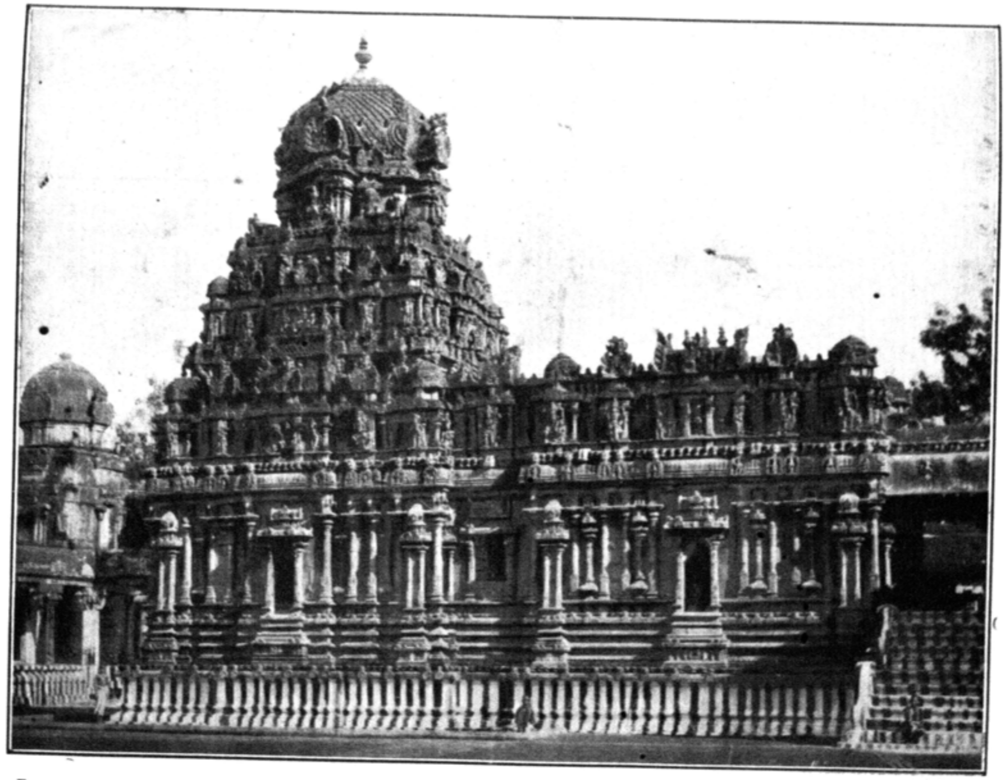


Photo. by Bourne and Shepherd, Calcutta.

सवरह्मान्या मन्दिर—तंजौर।

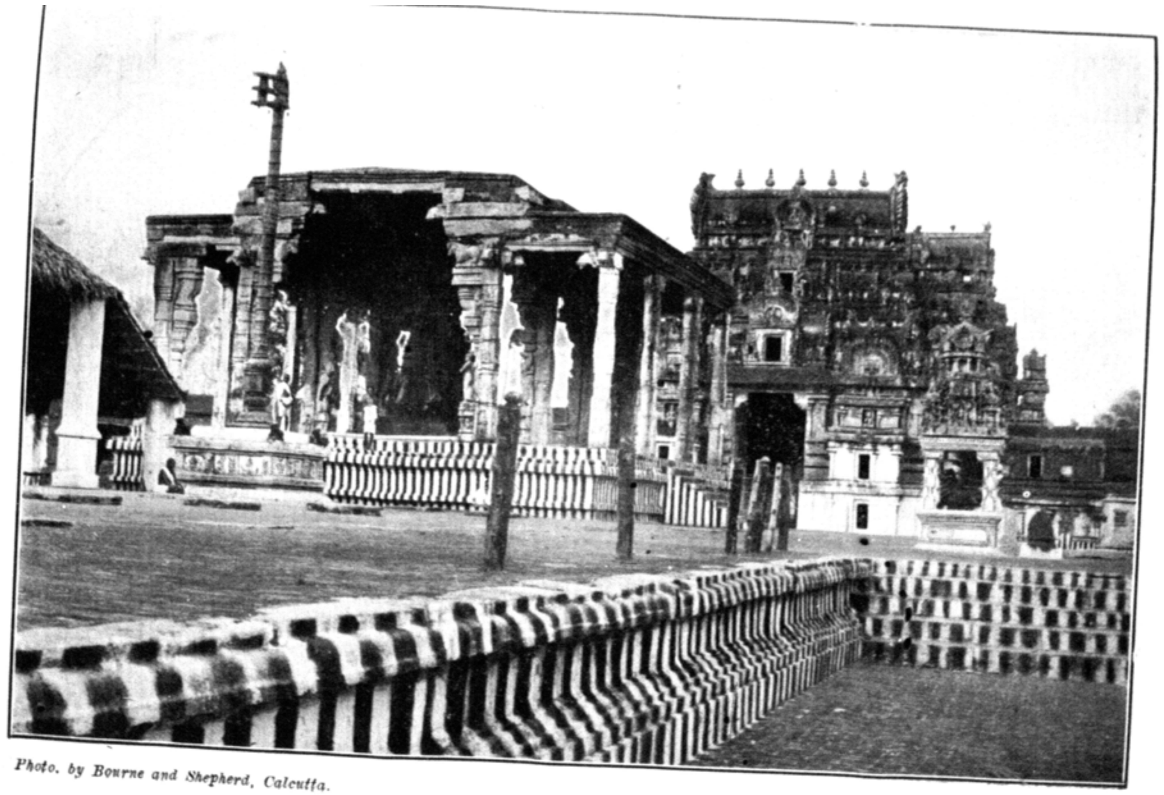


Photo. by Bourne and Shepherd, Calcutta.

ब्रहि स्वर मन्दिर—तंजौर।

पानी मूर्तियों पर डाला जाता है और पीछे पवित्र समझ कर लोग पीते हैं ॥

तंजोर विद्या, धर्म और राज्य विषय का सदा दक्खिन में घर रहा है इस सबब से बहुतमशहूर है। यहां रेशमी ग़लीचे, जेवर तांबे की चीजें और अजीब अजीब नमूने बनते हैं॥

तंजोर में देशियों के लिये ६ चत्तरम और ५० होटल हैं और अंग्रेजों के लिये स्टेशन पर रिफ्रेशमेण्ट रूम सोने की भी जगह है। स्टेशन पर देशियों के लिये भी रिफ्रेशमेण्ट रूम यानी खाने का कमरा है जिसका इन्तिज़ाम एक ब्राह्मण के हाथ में है। तंजोर में सवारी मिलती है ॥

तंजोर साऊथ इण्डियन रेलवे पर मदरास बीच जंकशन से २२० मील है तीसरे दरजे का किराया २।=) लगता है ॥

तारकेश्वर।

अहाता बंगाल के जिला हुगली में गांव और रेलवे स्टेशन है। यहां एक बड़ाभारी और मशहूर शिवजी का मन्दिर है, जिस के दर्शन को हजारों यात्री साल भर आते रहते हैं। चढ़ावों के सिवा मन्दिर के साथ जमीन है और रुपया भी आता है। यह मन्दिर एक महन्त के हाथ में है जो मन्दिर के रुपये में से अपना गुजारा करता है ॥

तारकेश्वर में दो बड़े मेले होते हैं, पहला शिवरात्री के मौके पर फर्वरी के महीने में होता है और शिवजी के आधीन इस मेले को सब से अच्छा जानते हैं। यह मेला तीन दिन तक रहता है। और २० हजार के करीब यात्री इस में आते हैं। यात्री दिन को व्रत रखते हैं और रात को शिवजी की पूजा करते हैं। दूसरा मेला

चैत्र शंक्राती के मौके पर अपरैल में होता है। इसी मौके पर झूलन यात्रा के तेहवार होते हैं। इन दिनों में बहुत से लोग यहां आकर तप करते हैं। झूलन तेहवार आज कल वेजोखों है क्योंकि उपासकों को पेटी के साथ लटका देते हैं पहले उनकी दोनों पसलियों के इधर उधर का मांस चीर कर और उस में हुक लगाकर लटकाते थे। दूसरा मेला ६ दिन रहता है और उस में १५ हजार के करीब लोग आते हैं॥

इस गाउं में महन्त स्तीशचन्द्र गिरी और बाबू बिपनविहारी सैन की दो धर्मशाला हैं एक का नाम "तारकेश्वर" है और दूसरी बैद्यापुर कहलाती है, यहां कंगालों को दान पुण्य किया जाता है॥

तारकेश्वर कलकत्ते से ईस्टइण्डियन और बंगाल प्राविनशल रेलवे में ३६ मील है तीसरे दरजे का किराया ॥)॥ लगता है॥

तांदो महम्मदखां।

मुलक सिंध, जिला हैदराबाद सब डवीजन तांदो महम्मदखां का हेडकुआरटर और बड़ा नगर है और हैदराबाद से २२ मील के फासले पर गुनी नहर के किनारे पर बसा हुआ है। कहते हैं कि इस को मीर महम्मदखां तलपुर शाहवानी ने बसाया था। चावल, रेशम, धांत, तम्बाकू और रंग का व्योपार होता है। जूतियां और लकड़ी की चीज़ें यहां बनती हैं॥

इस नगर में एक मुसलमान वली की जो उस इलाके में बहुत मशहूर है खानगाह है। गडरिये इस वली को बहुत मानते थे क्योंकि जब कोई भेड़ या बकरी खोई जाती थी तो वह उसका पता बता देता था। लोग कहते हैं कि यह वली अन्धापन और शरीर के

और रोग भी दूर कर देता था, सितम्बर के महीने में ८ दिन तक इस खानगाह का मेला होता है जिस मे ५ हजार के करीब लोग आते हैं ॥

यहां एक हिन्दू महात्मा दो दो बोचर का मन्दिर भी है। कहते हैं यह महात्मा लोगों के दिल का भेद बता देते थे उन्हों ने और भी बहुत से आश्चर्य कर्म्म किये थे। यह मन्दिर हैदराबाद के सारे जिले में मशहूर है ॥

तांदो महमदखां में एक सराय और अफ़सरों के लिये पबलिक वर्कस डीपार्टमेण्ट का बंगला है स्टेशन पर ऊंट और गाड़ियां नगर जाने के लिये मिलती है ॥

तांदो महम्मदखां नार्थ वैस्टर्न रेलवे की हैदराबाद कोटरी बदीन साख पर है इसका फासला कोटरी से २८ मील है तीसरे दरजे का किराया ।-)। लगता है ॥

तीरुवत्तयूर ।

मदरास रेलवे पर स्टेशन है यहां श्री तयागा राजा स्वामी का मन्दिर है जहां हर शुक्रको मेला होता है जिस से मदरास से बहुत यात्री आते हैं फरवरी या मार्च में ब्रह्म ऊतशावम और मोलुगादी सरवई मेला होता है इस में ५० हजार के करीब यात्री आते हैं। अप्रैल में एक और वत्ताबली नत्त्रियरका ब्रह्म ऊतशावम होता है जो १५ दिन तक रहता है इस में भी बहुत यात्री आते हैं तीरुवत्तयूर से चौथाई मील दक्खिन की तरफ कलादीपत है जहां श्रीवरदा राजा विष्णु का मन्दिर है, इस का ब्रह्म ऊतशावम मई में होता है ॥

स्टेशन के पास चोलत्रियां याने टिकने के स्थान बने हुए हैं।

तीरुवत्तयूर रायापुरम मदरास से ७ मील है तीसरे दरजे का किराया -)। लगता है ॥

तीरुपती ।

मदरास से ६० मील के करीब उत्तर पश्चिम को है । पहाड़ी के नीचे का नगर नीच तीरुपती कहलाता है और पहाड़ी के ऊपर के मन्दिर को ऊपर का तिरुपती कहते हैं पर्ब्बत की ७ चोटियों में से एक के पास जिसको सेश चिल्लम कहते हैं यह मन्दिर है । कहते हैं यह पहाड़ी पहिले मेरु पर्ब्बत का हिस्सा थी पर एक दफा अदीशेष्ण (हजार सिर वाले सर्प) और वायु (पौन का देवता) में झगड़ा हुआ कि दोनों मे से कौन जियादा बली है आदिशेष्ण ने अपना जोर दिखाने के लिये मेरु पर्ब्बत की एक चोटी अपने एक सिर पर उठाई पर वायु ने अपने सांस से ऐसा झकड़ चलाया के पहाड़ की चोटी अदीशेष्ण के सिर से उड़गई और धरती पर गिर कर तीरुपती की पहाड़ी बन गई ॥

बड़ा मन्दिर नीचा तीरुपती से ६ मील है पर उस के बाहर के दरवाजे एक मील सेही शुरू होजाते हैं । यहां ३ तीर्थम या तालाब हैं । जो सब पवित्र समझे जाते हैं सबसे बड़े मन्दिर के पास स्वामी पुश्कार्नी तालाब है जो १०० गज लम्बा और ५० गज चौड़ा है उस के गिर्द पत्थर की सीढ़ियां बनी हैं सब यात्री उसमें स्नान करते हैं । कहते हैं साल में एक दफा सारे पवित्र दरियाओं और तालाबों का पानी इकट्ठा होजाता है और उस समय स्वामी पुश्कार्नी का पानी चढ़ जाता है उस वक्त इस में स्नान करने से कहते हैं सब पाप नष्ट होजाते हैं ॥

मन्दिर में विष्णु की ७ फीट ऊंची पत्थर की खड़ी मूर्ति है उस के चार हाथ हैं एक दाहने हाथ में गुरज है और एक बाएं हाथ में चक्कर है। दूसरे हाथ से इशारा कर रहे हैं कि किस तरह पवित्र पर्व्वत बन गया और दूसरे बाएं हाथ में कमल का फूल है॥

जिन लोगों को कोई रोग हो या जिनके लड़का न होता हो वह इस मूर्ति के आगे वचन करते हैं। औरतें सिर के बाल चढ़ाती हैं बड़ी ड्योढ़ी के पास ही नाई उनका सिर मूडने के लिये बैठे रहते हैं।

उत्तर देश के यात्री इस मूर्ति को बाला जी ब्राह्मण की मूर्ति कहते हैं जिस को वह विष्णु का अवतार मानते हैं॥

सितम्बर महीने में यहां ब्रह्म ऊतशावम का तेहवार होता है जिस में अनगिनत यात्री आते हैं॥

तीरूपती साऊथ इण्डियन रेलवे के वेल्लुपुरम गदूर सेकशन पर स्टेशन है। मद्रास बीच जंकशन स्टेशन से पश्चिमी तीरूपती २६५ मील और पूर्वी तीरूपती २६६ मील है तीसरे दरजे का किराया ३) लगता है॥

तिलोठू।

अहाता बंगाल के जिला शाहआबाद में गाऊं है जो उस बारी से ५ मील पूर्व की तरफ है जहां से कुरदा दरिया की शाख तुरतराही निकलती है। यह जगह तोतला देवी का स्थान माना जाता है और बड़ी पवित्र ख्याल की जाती है। यहां पर एक मूर्ति है जिस पर सम्बत् १३८६ लिखा हुआ है यह मूर्ति स्त्रिया की है जो एक भैंसे की गर्दन पर से कूद कर एक मनुष्य को मार रही है।

कार्तिक के अखीर दिन यहां मेला होता है जिस में १० हज़ार के करीब लोग दूर दूर से आते हैं॥

इस गाओं के लिये सब से पास स्टेशन ईस्टइण्डियन रेलवे पर देहरी है जो कलकत्ते से ३४५ मील है तीसरे दरजे का किराया ३॥=)॥। लगता है। देहरी में यक्के और बहलियां सवारी के लिये मिलती हैं॥

देहरी में एक सराय और एक बंगला है पर तिलोठू में कोई नहीं॥

तिरुलई विल्लागाम।

गांव स्टेशन से २॥ मील दक्खिन पश्चिम की तरफ है। यहां विष्णु के मन्दिर में जनवरी, जूलाई, सितम्बर, अकतूबर के महीनों में मेले होते है। ३० बर्ष हुए रामचन्द्र जी, लक्ष्मन, सीता जी और हनूमान की बड़ी बड़ी मूर्तियां यहां धरती के नीचे से निकली थीं॥

यह स्टेशन साऊथ इंडियन रेलवे की तंजीर डिस्टरिक्ट बोर्ड शाख पर है। इसका फासला मद्रास बीच जंकशन से २२५ मील तीसरे दरजे का किराया २॥) है॥

तिन्निवेली पुल।

यह नगर मद्रास अहाते में जिला तिन्नीवेली का सदर मुकाम है, इस की आबादी २५००० है। यहां एक ईसाइयों का कालिज और कई छोटे छोटे स्कूल हैं। इस जगह से डेढ़ मील पूर्ब की तरफ पलमकोटा नगर है, जिस में १८००० की आबादी है। इस नगर में पहिले छावनी थी पर अब उठा ली गई है। २०

मील पश्चिम की तरफ पपानसम में रुई कातने का एक बड़ा भारी कारखाना है, वहां के लिये अम्बासमुद्राम स्टेशन पास है। तिन्नीवैली से ३६ मील कोर्टलम ठण्ढी जगह है जहां अंगरेज़ लोग बहुत जाते हैं। तेनकाली स्टेशन से कोर्टलम पहुंचते हैं कोर्टलम में हिन्दू यात्री भी बहुत जाते हैं। स्टेशन के पास दो चीनी साफ करने के कारखाने हैं॥

तिन्नीवैली नगर।

यहां नेल्लियप्पन कण्ठीमथाम्मनकोविल का मन्दिर शहर के बीच में है, और तम्बरापुरनी दरया के बीच में शहर से पौने मील के फासले पर एक मन्दिर सुब्रहमानिया स्वामीकोविल भी है॥

तिन्नीवैली ब्रज (पुल) स्टेशन साऊथ इण्डियन रेलवे में मदरास बीच जंकशन से ४४६ मील और तिन्नीवैली नगर ४४८ मील है तीसरे दरजे का किराया दोनों जगह से ४।॥ॾ) है॥

तिरुत्तनी।

इस स्टेशन से करीब एक मील पश्चिम की तरफ कुमार स्वामी का मशहूर मन्दिर है जहां हर महीने मेला लगता है जिस में बहुत लोग आतेहैं। अगस्त और जनवरी में आदि कथेकई और तए कथे कई दो बड़े भारी मेले होते हैं जिन में अनगिनत यात्री दूर २ से आते हैं॥

यहां तीन सौ के करीब चोलत्रियां (टिकने की जगह) और चत्तरम (धर्म्मशाला) हैं और पांच ब्राह्मण होटल हैं जिन में थोड़ी देर पहिले कहने से खाना मिल सकता है॥

तीरुत्तनी मद्रास रेलवे पर मद्रास शहर से ५१ मील है तीसरे दर्जे का किराया डाक गाड़ी में ॥৶) और ॥-) लगता है ॥

तिरूर।

मल्लापुरम छावनी के लिये यह सब से पास रेलवे स्टेशन है। यहां खासी सडकें है पर सवारी के लिये देसी गाड़ियां मिलती हैं मार्च के महीने में मुरगों का मेला होता है जिस में १० या १२ हजार मलायम यात्री आते हैं॥

तिरूर में देसियों के वास्ते कई होटल हैं और स्टेशन के पास एक धर्म्मशाला है॥

तिरूर मद्रास रेलवे की साऊथ वैस्ट लाइन पर मद्रास से ३८८ मील है डाक गाड़ी में तीसरे दरजे का किराया ५-) और सवारी गाडी में ४-) लगता है॥

तीरुवन्नमलई।

यहां तीरुवन्नमलई का बड़ाभारी मन्दिर है। जहां हजारों यात्री आते हैं। यात्रियों के विश्राम के लिये इस जगह ४० चत्तरम हैं। किर्थगई और चेत्र बसथम को दो बड़े तेहवार भी होते हैं जिन में एक २ लाख के करीब लोग आते हैं। हर मंगल को एक मेला भी होता है। बांस, लकड़ी, अनाज और पत्थर यहां से बाहर जाता है और रुई बाहर से आती है। स्टेशनपर चाह, काफी और अंगरेजी पानी मिलता है॥

तीरुवन्नमलई साऊथ इण्डियन रेलवे पर मद्रास बीच स्टेशन से १४३ मील है तीसरे दरजे का किराया १॥-) लगता है॥